SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

मरुवाणी

प्रथम अंक (वर्ष 2025-26)

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) राजस्थान, जयपुर

मरुवाणी

प्रथम अंक (वर्ष 2025-26)

पत्रिका परिवार

संरक्षक एवं महालेखाकार

श्री रामावतार शर्मा

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन एवं ए.एम.जी.-III)

श्री अक्षय मोहन खंडारे

संपादक मंडल:

श्री संजीव कुमार सुराना, वरिष्ठ उप महालेखाकार (सेवानिवृत)

श्री वज़ीर सिंह, सहायक निदेशक

श्री राजेश रायसिंघानी, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

संपादन सहयोग:

श्री सारांश गुप्ता, कनिष्ठ अनुवादक एवं राजभाषा अनुभाग में पदस्थ अन्य सदस्यगण,

समस्त रचनाकार

विशेष:

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं लेखकों के व्यक्तिगत विचार एवं भावनाएँ हैं; पत्रिका परिवार एवं संपादक मंडल का इनसे सहमत/असहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी वाद-विवाद की स्थिति में न्यायिक क्षेत्र जयपुर (राजस्थान) होगा।

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	रचना / लेख	रचनाकार / लेखक	पृष्ठ सं
1.	माननीय केन्द्रीय गृह मंत्री का संदेश	श्री अमित शाह जी	4-5
2.	संदेश	• महालेखाकार एवं पत्रिका संरक्षक • वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशा. एवं ए.एम.जी.-III) • भूतपूर्व वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशा.) • उप महालेखाकार (ए.एम.जी.-I) • उप महालेखाकार (ए.एम.जी.-II) • सहायक निदेशक (रा.भा.)	6 7 8 9 10 11
3.	लोगों ने मुझे छोड़ दिया है	ओमप्रकाश गुप्ता, अतिथि रचनाकार	13
4.	राजपूताना से राजस्थान: एक संघर्षमय यात्रा	शालिनी अग्रवाल, व.ले.प.	14-18
5.	रणथम्भौर की रानी	सारांश गुप्ता, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक	19-21
6.	मुंशी प्रेमचंद	कुसुमलता, ले.प.	22-23
7.	डिजिटल अरेस्ट	सुमित्रा, ऑडिट क्लर्क	24-26
8.	अंतर्मन के साथ	वंशिका भदाला, अतिथि रचनाकार	27
9.	अनुष्का	राहुल भदाला, ले.प.	28-29
10.	संघर्ष	राजेश रायसिंघानी, व.ले.प.अ.	30-34
	कार्यक्रम की झलकियाँ		35-38
11.	महादेव - नाथों के नाथ	वजीर सिंह, सहायक निदेशक	39-43
12.	मेरे बाऊजी	निधि अग्रवाल, अतिथि रचनाकार	44
13.	टुकड़े	आशीष अग्रवाल, स.ले.प.अ.	45-46
14.	जीना तो गरीबों ही बेहतर है	विमला अग्रवाल, अतिथि रचनाकार	47
15.	किस्मत की किताब	मीना कँवर, अतिथि रचनाकार	48-51
16.	दोस्ती का सफ़र	लोकेन्द्र सिंह, अतिथि रचनाकार	52-53
17.	राजपूताना हाड़ी रानी	अशोक कुमार यादव, स.ले.प.अ.	54-55
18.	श्री परमपिता परमेश्वर नाम (राम) का माहात्म्य	रामनारायण, व.ले.प.	56-63
19.	ख्वाबों की दरमियाँ ख्वाब कई	राहुल भदाला, ले.प.	64
20.	प्रेम कहानी	व़जीर सिंह, सहायक निदेशक	65-70
21.	वार्षिक कार्यक्रम 2025-26	राजभाषा विभाग की वेबसाईट से	71-74

सत्यमेव जयते

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

प्रिय देशवासियो!

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

इस वर्ष का हिंदी दिवस समारोह विशेष है, क्योंकि 14 सितंबर, 1949 को भारत की संविधान सभा द्वारा हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किए जाने के 75 वर्ष पूरे हो रहे हैं। यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि राजभाषा विभाग द्वारा इसे 'राजभाषा हीरक जयंती' के रूप में मनाया जा रहा है।

भारत अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, पुरातन सभ्यता और भाषिक विविधता के लिए दुनिया में विशिष्ट स्थान रखता है। क्षेत्रीय भाषाओं ने हमारी अतुलनीय सांस्कृतिक विविधता को आगे बढ़ाने और देशवासियों को भारतीयता के अटूट सूत्र में पिरोने का काम किया है। अतः हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं को भारतीय अस्मिता का प्रतीक कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान स्वराज, स्वदेशी और स्वभाषा पर विशेष बल दिया गया था। हिंदी ने तब से लेकर आज तक, देश की विविधता में एकता स्थापित करने और सामूहिक सद्भावना को सुदृढ़ करने का महती कार्य किया है। हिंदी की इसी शक्ति के कारण उन दिनों हिंदी की स्वीकार्यता को बढ़ावा देने वालों में लोकमान्य तिलक, महात्मा गाँधी, लाला लाजपत राय, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, राजगोपालाचारी एवं अन्य गैर-हिंदीभाषी महानुभावों की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। आजादी के बाद हिंदी की इसी सर्वसमावेशी प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा संविधान की आठवीं अनुसूची में प्रमुख भारतीय भाषाओं को स्थान दिया।

हिंदी एक ऐसी भाषा है, जिसमें आपको देश की कई भाषाओं के तत्व मिल जाएँगे। इसका इतिहास लिखने वालों ने तो रासो ग्रंथों, सिद्धों-नाथों की वाणियों से लेकर भक्तिकाल के संत कवियों और खड़ी बोली तक इसकी परम्परा को माना है। कवि चंदबरदाई से लेकर महाकवि विद्यापति, ज्योतिरीश्वर ठाकुर, तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, आंडाल, गुरू नानकदेव जी, संत रैदास, कबीरदास जी से लेकर आज तक कई साहित्यकारों व भाषाविदों ने भारतीय भाषाओं के माध्यम से हिंदी का मार्ग प्रशस्त किया। इसके विकास में उन असंख्य लोकभाषाकारों का भी अमूल्य योगदान है, जो गायन-वादन के द्वारा इस भाषा के आदिरूपों को जन-जन तक पहुँचाते रहे। हिंदी भाषा मैथिली, भोजपुरी, अवधी, ब्रज, हरियाणवी, राजस्थानी, मेवाती, गुजराती, छत्तीसगढ़ी, बघेली, कुँमाउनी, गढ़वाली जैसी मातृभाषाओं के समन्वित रूप से ही तो बनी है। मुझे खुशी है कि हिंदी भाषा इन मातृभाषाओं को अक्षुण्ण रखते हुए आगे बढ़ रही है और लगातार विकसित हो

रही है। आज जब राजभाषा के रूप में हिंदी अपनी 75वीं वर्षगाँठ पूरी कर रही है, तब हमें इसका यह इतिहास जरूर याद रखना चाहिए।

14 सितंबर, 1949 से लेकर लगातार राजभाषा के रूप में हिंदी के संवर्धन के अनेक काम हुए हैं। राजभाषा विभाग की विशाल यात्रा को पीछे मुड़ कर देखें, तो हमें कई महत्वपूर्ण पड़ाव दिखाई देते हैं, जहाँ इस विभाग ने जिम्मेदारीपूर्वक सरकारी तंत्र को भाषिक चेतना के प्रति प्रेरित किया है।

साल 1977 में श्रद्धेय **अटल बिहरी वाजपेयी जी** ने तत्कालीन विदेश मंत्री के रूप में पहली बार संयुक्त राष्ट्र की आम सभा को हिंदी में संबोधित कर राजभाषा का मान बढ़ाया। माननीय **प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी** जब अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी भाषा में संबोधन देते हैं और भारतीय भाषाओं के उद्धरण देते हैं, तो समूचे देश में अपनी भाषा के प्रति गौरव के भाव को और बल मिलता है। बीते 10 वर्षों में हमारी सरकार ने राजभाषा को और भी समृद्ध व सक्षम बनाने के हर संभव कार्य किए हैं। 2018 में अनुवाद टूल कंठस्थ का लोकार्पण हो, 2020 में भारत की नई शिक्षा नीति में मातृभाषाओं को विशेष महत्व देने की अनुशंसा हो, केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर में आधिकारिक भाषाओं की सूची में कश्मीरी, डोगरी और हिंदी को शामिल करने के लिए विधेयक पारित करना हो, 2022 में हिंदी दिवस पर कंठस्थ 2.0 का लोकार्पण हो या साल 2021 से हर साल हिंदी दिवस पर 'अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन' आयोजित करना हो, सरकार राजभाषा व भारतीय भाषाओं के संरक्षण के प्रति प्रतिबद्ध है। साथ ही, संसदीय राजभाषा समिति ने अपने प्रतिवेदन का 12वाँ खंड भी माननीय राष्ट्रपति महोदया को सौंप दिया है।

राजभाषा में कार्यों को प्रोत्साहन देने हेतु हमने साल 2022 से संशोधित राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना भी शुरू की है जिसके तहत ज्ञान-विज्ञान, अपराध शास्त्र अनुसंधान, पुलिस प्रशासन, संस्कृति, धर्म, कला, धरोहर एवं विधि के क्षेत्र में राजभाषा में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु पुरस्कार दिए जाते हैं। साथ ही, राजभाषा विभाग ने डिजिटल शब्दकोश 'हिंदी शब्द सिंधु' का निर्माण भी किया है।

दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में यह और भी आवश्यक हो जाता है कि हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के माध्यम से जन-जन तक संवाद स्थापित करते हुए राष्ट्र की प्रगति सुनिश्चित की जाए। यह अत्यंत आवश्यक है कि हम व्यापक रूप से सरल और सहज भाषा का प्रयोग करके राजभाषा और जनभाषा के बीच की दूरी को पाटें, ताकि देश के हर वर्ग का नागरिक देश की प्रगति से परिचित भी हो और लाभान्वित भी। इस तरह 'आत्मनिर्भर भारत' व 'विकसित भारत' के लक्ष्य को प्राप्त करने में हमारी भारतीय भाषाओं की सशक्त भूमिका रहने वाली है।

मुझे विश्वास है कि हिंदी दिवस एवं राजभाषा हीरक जयंती समारोह, मातृभाषाओं के प्रति राजभाषा विभाग की प्रतिबद्धता को और भी ऊँचाई देने का सार्थक माध्यम बनेगा। मैं राजभाषा विभाग के कार्यों की सराहना करते हुए हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

वंदे मातरम!

(अमित शाह)

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2024

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि कार्यालय द्वारा वार्षिक हिन्दी पत्रिका “मरुवाणी” के प्रथम अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व से ही राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में पत्र-पत्रिकाओं का प्रमुख योगदान रहा है। हमारे कार्यालय के अधिकारी एवं कर्मचारी “मरुवाणी” में अपनी रचनाओं के माध्यम से हिंदी के विकास एवं प्रसार में अपना बहुमूल्य योगदान दे रहें हैं, जिसके लिए वे प्रशंसा के पात्र है।

किसी भी स्वाधीन देश के लिए, जो महत्व उसके राष्ट्रीय ध्वज और राष्ट्रगान का है, वही उसकी राजभाषा का है। राजभाषा देश के भिन्न-भिन्न भागों को एक सूत्र में पिरोने का कार्य करती है। इसके माध्यम से जनता न केवल अपने देश की नीतियों और प्रशासन को भली-भांति समझ सकती है, बल्कि उसमे स्वयं भी भाग ले सकती है। प्रजातंत्र की सफलता के लिए ऐसी व्यवस्था अत्यंत आवश्यक है।

मुझे आशा है कि हमारी पत्रिका “मरुवाणी” राजभाषा के प्रचार-प्रसार में अपना योगदान ऐसे ही देती रहेगी। “मरुवाणी” के प्रथम अंक के सफल प्रकाशन के लिए इससे जुड़े सभी रचनाकारों और संपादक मंडल को मैं बधाई देता हूँ।

पत्रिका के स्वर्णिम भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

(रामावतार शर्मा)
महालेखाकार

***

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

संदेश

कार्यालय की वार्षिक गृह पत्रिका “मरुवाणी” का प्रथम अंक सुधी पाठकों को समर्पित करते हुए मुझे अत्यंत हर्षानुभूति हो रही है। मुझे यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि सभी के अतुलनीय सहयोग से ही यह संभव हो सका है। कार्य की निरंतरता अपने आप में सफलता का प्रतीक है।

पत्रिका के माध्यम से रचनाकारों को अपनी छिपी साहित्यिक और सृजनात्मक प्रतिभा की अभिव्यक्ति का मौका मिलता है जिससे उनकी प्रतिभाएं परिलक्षित हुई है। इसके परिणामस्वरूप पत्रिका के रचनाकारों ने विभिन्न पहलुओं और मुद्दों पर अपने सरल और स्पष्ट रूप से अपने विचार व्यक्त किए हैं।

मैं आशा करता हूँ कि कार्यालय के सभी अधिकारी और कर्मचारी कार्यालय का अधिकाधिक कार्य हिंदी में करेंगे और राजभाषा द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति में अपना योगदान देंगे।

आप सभी से आशा है कि आप अपनी प्रतिक्रिया अवश्य प्रेषित करेंगे और “मरुवाणी” की सफलता में अपना कीमती योगदान देते रहेंगे। “मरुवाणी” के सफल संपादन के लिए संपादक मंडल, सभी रचनाकारों और पत्रिका से प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से जुड़े सभी कार्मिकों को बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि पत्रिका का यह अंक रुचिकर लगेगा एवं पत्रिका को आपका स्नेह मिलता रहेगा।

(अक्षय मोहन खंडारे)
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

***

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

संदेश

कार्यालय की वार्षिक हिंदी पत्रिका “मरुवाणी” के प्रथम अंक का प्रकाशन हर्ष एवं गर्व की बात है। “भारत में हर भाषा का सम्मान है, पर हिंदी ईश्वर का वरदान है।“

एक भाषा के रूप में हिंदी न सिर्फ भारत की पहचान है बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है। बहुत सरल, सहज और सुगम भाषा होने के साथ ही हिंदी विश्व की संभवतः सबसे वैज्ञानिक भाषा है जिसे दुनिया भर में समझने, बोलने और चाहने वाले लोग बहुत बड़ी संख्या में मौजूद हैं। यह विश्व में तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है जो हमारे पारम्परिक ज्ञान, प्राचीन सभ्यता और आधुनिक प्रगति के बीच एक सेतु भी है।

“मरुवाणी” पत्रिका ने इस सेतु के एक मजबूत स्तंभ के रूप में अपने को स्थापित किया है। पत्रिका में प्रकाशित रचनाएँ हमारे कार्यालय के अधिकारियों और कर्मचारियों की राजभाषा के प्रचार-प्रसार के प्रति निष्ठा एवं समर्पण को प्रतिबिंबित करती हैं। यह पत्रिका हमारे कार्मिकों में छिपी साहित्यिक प्रतिभा को उजागर तथा विकसित करने का एक प्रभावी माध्यम बन कर उभरी है।

“मरुवाणी” के सफल प्रकाशन के लिए सभी रचनाकार, संपादक मण्डल तथा प्रकाशन में सहयोग देने वाले अन्य कार्मिक भी बधाई के पात्र हैं। आशा है कि “मरुवाणी” पत्रिका हिंदी के प्रचार-प्रसार के अपने पुनीत उद्देश्य में सफल होगी एवं ज्यादा से ज्यादा लोगों के लिए प्रेरणास्रोत बनेगी। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

(संजीव कुमार सुराना)
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) (सेवानिवृत)

***

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

<u>संदेश</u>

मैं हमारी वार्षिक हिंदी पत्रिका “मरुवाणी” के प्रथम अंक को प्रस्तुत करते हुए बहुत हर्षित हूँ। सर्वसाधारण की जन-भाषा हिंदी का प्रयोग करना और प्रचार-प्रसार करना हमारी इस पत्रिका “मरुवाणी” का प्रमुख उद्देश्य है। इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु कार्यालय के अधिकारियों और कर्मचारियों द्वारा किया गया कार्य सराहनीय है।

किसी भी देश की भाषा उसकी सभ्यता, संस्कृति और उसकी उन्नति की पहचान होती है। राष्ट्र को एकता के सूत्र में बांधने वाली हमारी यह भाषा हमारे स्वाभिमान का प्रतीक है। मैं हिंदी के नवीन लेखकों को प्रोत्साहन देने और सुधी पाठकों तक इतनी सुंदर पठनीय सामग्री पहुँचाने के इस प्रयास के लिए संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि आप सभी के समेकित प्रयास से “मरुवाणी” के आगामी अंक उन्नत शिखर पर आसीन होंगे।

मैं आशा करता हूँ कि हमारे कार्यालय के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी अपने रचनात्मक कौशल से “मरुवाणी” को समृद्ध कर राजभाषा के प्रचार-प्रसार में अपना योगदान देते रहेंगे। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु सभी रचनाकार, संपादक मण्डल एवं प्रकाशन से जुड़े सभी कार्मिक बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका के निरंतर प्रकाशन एवं स्वर्णिम भविष्य हेतु मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

विनोद.

(विनोद परिहार)
उप महालेखाकार (ए.एम.जी.-I)

***

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

संदेश

"हिंदी भाषा वह धरोहर है, जो हमें हमारी पहचान देती है और विविधता में एकता का प्रतीक बनती है।"

हमारी वार्षिक हिंदी पत्रिका "मरुवाणी" के प्रथम अंक को प्रस्तुत करते हुए बहुत हर्षित हूँ। हिंदी न केवल एक भाषा है, बल्कि यह देश की विविधता में एकता का प्रतीक है। यह विभिन्न संस्कृतियों, विचारों और भावनाओं को जोड़ने का माध्यम है। हमारे देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने में हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका है। यह हमारी पहचान को मजबूती प्रदान करती है और सामाजिक समरसता का आधार बनती है।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भी हिंदी ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। यह वह भाषा थी, जिसने राष्ट्रवादी विचारों को जन-जन तक पहुँचाने में सहायता की। महात्मा गांधी, बाल गंगाधर तिलक और अन्य नेताओं ने हिंदी का उपयोग कर लोगों को एकजुट किया और स्वतंत्रता के लिए प्रेरित किया। हिंदी ने स्वतंत्रता की चेतना को जागृत किया और इसे जन आंदोलन का हिस्सा बनाया।

संविधान सभा में भी हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका रही। यह उस समय की संवैधानिक चर्चा का हिस्सा बनी, जब भारत की आत्मा को परिभाषित किया जा रहा था। हिंदी को आधिकारिक भाषा के रूप में स्वीकार करने का निर्णय हमारे लोकतंत्र की नींव को मजबूत करने वाला था। स्वतंत्रता के बाद, हिंदी ने न केवल साहित्य और कला में, बल्कि विज्ञान, तकनीकी और समाज सेवा में भी अपनी पहचान बनाई। आज हिंदी एक सशक्त भाषा है, जो हमें वैश्विक मंच पर पहचान दिला रही है।

पत्रिका के सभी रचनाकारों, संपादक मंडल के सदस्यों को हार्दिक बधाई।

प्रतिभा सिंह

(प्रतिभा सिंह)
उप महालेखाकार (ए.एम.जी.-II)

***

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

संदेश

हमारी हिंदी पत्रिका “मरुवाणी” का यह अंक आपके सामने प्रस्तुत करते हुए हमें बड़ी ख़ुशी हो रही है। कार्यालयों से प्रकाशित होने वाली हिंदी पत्रिकाओं का राजभाषा के प्रचार-प्रसार में अहम योगदान होता है। हमारा भी यही प्रयास है पत्रिका के माध्यम से आप सभी पाठकों तक पहुँचने का।

निश्चित तौर पर किसी राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधने का माध्यम भाषा ही हो सकती है और राजभाषा हिंदी भी हमारे भारत देश के इंदिरा कोल (सियाचीन ग्लेशियर) को इंदिरा पॉइंट (भारत का दक्षिणतम बिंदु) से जोड़ने का सशक्त माध्यम है; इसलिए यह हमारे सम्मान से जुड़ा विषय है। अपनी भाषा का महत्व हमें तब ज्यादा महसूस होता है जब हम किसी अन्य देश में हो और कोई हमें हमारी भाषा बोलने वाला व्यक्ति मिल जाए; तो अत्यंत सुखद अनुभूति होती है और यह महसूस होता है कि आप अपनों के बीच में ही हैं; इस अहसास को अखिल भारतीय स्तर पर तबादले होने के कारण राजभाषा काडर एवं केन्द्रीय सिविल सेवाओं में पदस्थ अधिकारी और कर्मचारी या यु.एन. ऑडिट पर जाने वाले ज्यादा बेहतर तरीके से समझ सकते हैं।

बहुत निष्पक्षता के साथ यह कह सकता हूँ कि पत्रिका को आप तक पहुंचाने में पत्रिका परिवार की पूर्व संरक्षक-एवं-महालेखाकार श्रीमती अर्चना गुर्जर और वर्तमान संरक्षक-एवं-महालेखाकार श्री रामावतार शर्मा का निर्देशन लगातार मिलता रहा है; वर्तमान समूह अधिकारी (प्रशा.) श्री अक्षय मोहन खंडारे को भी धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने पत्रिका प्रकाशन के संबंध में अपना मार्गदर्शन प्रदान किया। संपादक मंडल के अन्य सदस्यों श्री संजीव कुमार सुराना और श्री राजेश रायसिंघानी का सम्पादन सहयोग निरंतर मिलता रहा। पत्रिका प्रकाशन में श्री सारांश गुप्ता के साथ-साथ राजभाषा में पदस्थ अन्य सदस्यों ने भी अपना कार्य ज़िम्मेवारी के साथ किया है। सभी रचनाकारों को भी हार्दिक बधाई।

निश्चित तौर पर हमारी पत्रिका के आगामी अंक में हम नए रचनाकारों के माध्यम से आप सभी तक जुड़ने में सफल होंगे। उम्मीद है पत्रिका “मरुवाणी” का यह अंक आपको पसंद आएगा; आपके सुझावों का सदैव स्वागत है।

(वजीर सिंह)
सहायक निदेशक (रा.भा.)

***

लोगों ने मुझे छोड़ दिया है

अकेलापन या एकान्त साधना, समझ नहीं मैं पाता हूँ।
लोगों ने मुझे छोड़ दिया है, या मैं उनको ठुकराता हूँ।
अपनी शर्तो पर जीना है।
एकान्त का विष पीना है।
शांति में ही तो साधना होती,
अकेले में कैसा जीना है ?
सबसे ही हूँ, प्यार चाहता, नहीं किसी को दे पाता हूँ।
लोगों ने मुझे छोड़ दिया है, या मैं उनको ठुकराता हूँ।
सबको देना ही बस चाहा।
नहीं किसी से पाना चाहा।
जिसने चाहा लूटा मुझको,
सबका हित ही मैनें चाहा।
जिसने भी है हाथ बढ़ाया, पकड़ नहीं मैं पाता हूँ।
लोगों ने मुझे छोड़ दिया है, या मैं उनको ठुकराता हूँ।
समझ नहीं मैं पाया खुद को।
दूर किया है, खुद से खुद को।
जिसने सब कुछ सौंप दिया था,
सौंप न पाया, उसको खुद को।
नहीं जिसे स्वीकार किया था, गीत उसी के गाता हूँ।
लोगों ने मुझे छोड़ दिया है, या मैं उनको ठुकराता हूँ।
तड़पन मिलने की अब उससे,
उसके बिन बिछड़ा हूँ खुद से।
खुद ही उससे दूर हुआ था,
मिलने की अब तड़पन उससे।
साधना नहीं अकेलापन है, नहीं मीत से मिल पाता हूँ।
लोगों ने मुझे छोड़ दिया है, या मैं उनको ठुकराता हूँ।

\- ओमप्रकाश गुप्ता, अतिथि रचनाकार

राजपूताना से राजस्थान: एक संघर्षमय यात्रा

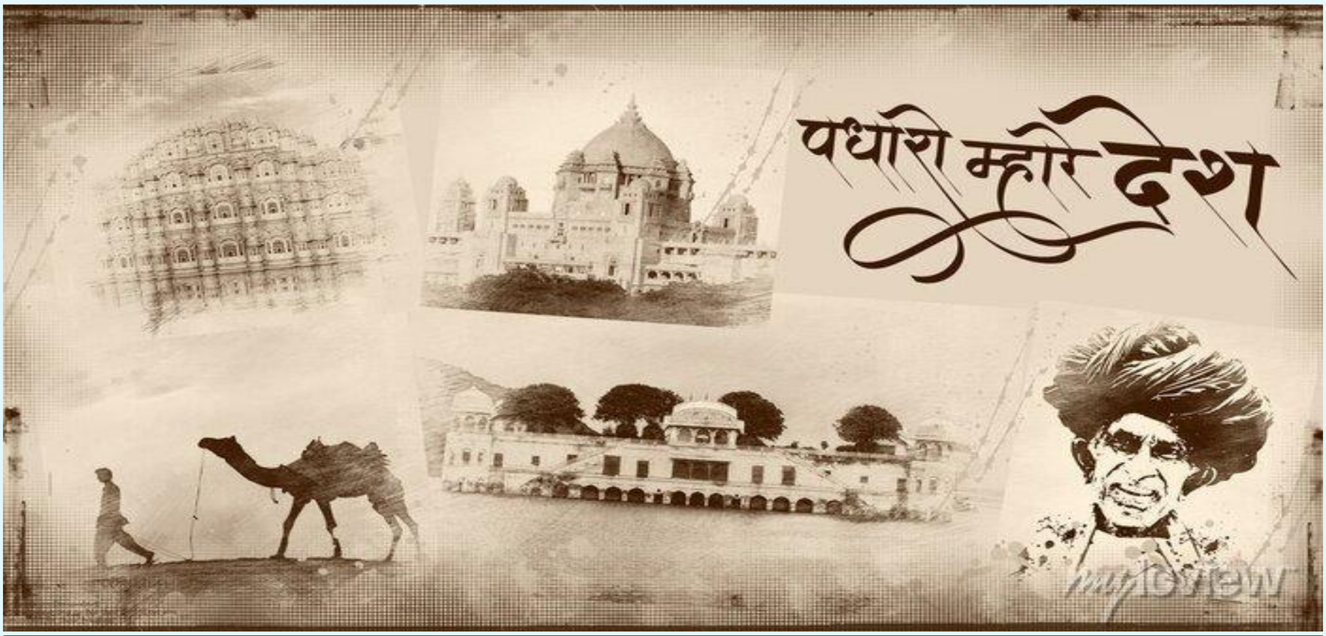

राजस्थान, जिसे कभी 'राजपूताना' कहा जाता था, अपने गौरवशाली इतिहास, संस्कृति और वीरता के लिए जाना जाता है। इस भूमि पर हजारों साल से राजपूत शासक राज्य करते आए हैं, जिन्होंने अपने राज्य, धर्म और सम्मान के लिए कई ऐतिहासिक युद्ध लड़े। राजपूताना से राजस्थान तक की यह यात्रा एक कठिन संघर्ष, साहस और कूटनीति से भरी हुई है, जो भारत के इतिहास में एक अनूठा स्थान रखती है।

राजपूताना का आरंभ

राजपूतों का उदय 6वीं और 7वीं शताब्दी के दौरान हुआ, जब यहाँ विभिन्न राजपूत कबीले शासन करने लगे। इन्हीं राजाओं के समूह को "राजपूताना" कहा गया, जिसका अर्थ है "राजाओं की भूमि"। इस नामकरण के संदर्भ में जेम्स टॉड, जो एक ब्रिटिश अधिकारी और इतिहासकार थे, ने अपनी पुस्तक "*Annals and Antiquities of Rajasthan*" में लिखा है: ***"The Rajputs are the living history of India, their deeds speak louder than words."***

राजपूत शब्द का अर्थ ही "राजा का पुत्र" या "राजा की संतान" होता है। इसीलिए राजपूतों का मूल स्वभाव साहसी, वीर और बलिदान के लिए तत्पर रहने वाला होता है। इन राजपूत राजाओं ने अपने-अपने राज्य की रक्षा और स्वतंत्रता के लिए हर संभव प्रयास किया। वे अपनी धरती को मुगलों, तुर्कों, अफगानों और अन्य बाहरी आक्रमणकारियों से बचाने के लिए हमेशा तैयार रहते थे।

राजपूताना में 22 छोटे-बड़े राज्य थे, जिनमें मेवाड़, मारवाड़, आमेर, और जोधपुर प्रमुख थे। इन राज्यों ने सदियों तक अपनी स्वतंत्रता और स्वाभिमान के लिए संघर्ष किया।

मेवाड़ और महाराणा प्रताप का संघर्ष

मेवाड़ का राज्य राजपूताने का एक प्रमुख राज्य था, जो अपनी वीरता और शौर्य के लिए प्रसिद्ध था। महाराणा प्रताप, मेवाड़ के महान योद्धा और शासक थे, जिन्होंने मुगलों के खिलाफ स्वतंत्रता के संघर्ष में अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। अकबर ने कई बार महाराणा प्रताप को झुकाने का प्रयास किया, लेकिन महाराणा ने अपनी स्वतंत्रता और सम्मान के लिए कभी समझौता नहीं किया।

हल्दीघाटी का युद्ध (1576) भारतीय इतिहास में स्वतंत्रता के संघर्ष का सबसे प्रमुख उदाहरण है। इस युद्ध में महाराणा प्रताप ने अकबर की विशाल मुगल सेना का सामना किया। युद्ध के दौरान, राणा प्रताप के अद्वितीय घोड़े चेतक और उनके शौर्य ने यह सिद्ध कर दिया कि राजपूत अपने सम्मान और स्वतंत्रता के लिए प्राणों की आहुति देने से भी पीछे नहीं हटते। यह संघर्ष केवल युद्ध का नहीं था, बल्कि यह राजपूताने के आत्मसम्मान और स्वतंत्रता की रक्षा का प्रतीक था।

महाराणा प्रताप ने जीवन भर मुगलों के सामने आत्मसमर्पण नहीं किया और जंगलों में रहकर भी संघर्ष जारी रखा। उन्होंने कहा था, "मैं अपने पूर्वजों की स्वतंत्रता को अक्षुण्ण रखूंगा, चाहे इसके लिए मुझे अपने प्राणों की आहुति देनी पड़े।"

यह कथन राजपूताने की स्वतंत्रता के प्रति उनकी निष्ठा और साहस का प्रतीक है।

मारवाड़ और जोधपुर की गाथा

मारवाड़ का क्षेत्र, जो आज जोधपुर के नाम से जाना जाता है, राजपूताना के सबसे शक्तिशाली राज्यों में से एक था। जोधपुर के राजा जसवंत सिंह ने भी मुगलों के खिलाफ कई युद्ध लड़े। उन्होंने अपनी राजनीतिक कूटनीति से न केवल मुगलों से संधि की, बल्कि अपने राज्य की स्वतंत्रता भी बनाए रखी। जोधपुर का मेहरानगढ़ किला इस संघर्ष और वीरता की गाथाओं का मूक साक्षी है।

मुगलों से संघर्ष: स्वतंत्रता की लड़ाई

राजपूताने के राजाओं और मुगलों के बीच संघर्ष का इतिहास बहुत पुराना है। मुगल सम्राटों ने कई बार राजपूत राज्यों को अपने अधीन करने का प्रयास किया, लेकिन अधिकांश राजपूत राजाओं ने मुगलों के सामने आत्मसमर्पण करने के बजाय युद्ध करना पसंद किया। हालांकि कुछ राजपूत राजाओं ने मुगलों के साथ समझौता भी किया, ताकि उनके राज्य सुरक्षित रहें और जनता को अत्याचारों से बचाया जा सके।

राजस्थान के कई राज्यों ने मुगलों के साथ वैवाहिक संधियाँ कीं, ताकि राजनीतिक स्थिरता कायम हो सके। आमेर के राजा भगवंत दास की बेटी जोधा बाई का अकबर के साथ विवाह इसी

कूटनीति का एक उदाहरण है। हालाँकि, यह विवाह और समझौते राज्य की रक्षा के उद्देश्य से किए गए थे, लेकिन राजपूतों का मुख्य उद्देश्य सदैव अपने राज्य और सम्मान की सुरक्षा करना था।

मुगल सम्राट अकबर ने भी राजपूतों के शौर्य को स्वीकार करते हुए कहा था, "राजपूत वीरता के अद्वितीय उदाहरण हैं, जो अपनी स्वतंत्रता के लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं।"

मराठों से संघर्ष

18वीं शताब्दी के दौरान मराठों का उदय हुआ और उन्होंने उत्तरी भारत में अपने साम्राज्य को विस्तार देना शुरू किया। इस दौरान राजपूताने के कई राज्यों को मराठों के आक्रमण का सामना करना पड़ा। मराठों की सेना बेहद संगठित और शक्तिशाली थी, और उन्होंने राजपूताने के राज्यों पर दबाव बनाकर कर वसूलने का प्रयास किया।

हालांकि, कई राजपूत राजाओं ने मराठों के खिलाफ संघर्ष किया और अपनी स्वतंत्रता को बनाए रखने के लिए रणनीतियाँ अपनाईं। इस दौरान राजपूत राजाओं की कूटनीति और सैन्य-कौशल ने यह साबित कर दिया कि वे न केवल युद्ध में वीर हैं, बल्कि राजनीतिक संधियों में भी पारंगत हैं।

अंग्रेजों के आगमन और राजपूताना की राजनीतिक स्थिति

18वीं शताब्दी के अंत और 19वीं शताब्दी के प्रारंभ में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी का प्रभाव भारत में बढ़ने लगा। अंग्रेजों ने अपनी कूटनीति और शक्ति का प्रयोग कर भारतीय राज्यों को अपने अधीन करने का प्रयास किया। राजपूताना के राजाओं ने भी अंग्रेजों के साथ संधियाँ कीं, ताकि उनके राज्यों की स्वतंत्रता और सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।

1820 के दशक तक अधिकांश राजपूत राज्यों ने अंग्रेजों के साथ संधि कर ली थी, जिसके तहत वे अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार करते थे, लेकिन आंतरिक मामलों में उन्हें स्वतंत्रता दी गई। इस संधि व्यवस्था के तहत राजपूत राज्यों को अपने-अपने राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था चलाने का अधिकार था, लेकिन ब्रिटिश सत्ता के प्रति वफादारी बनाए रखनी पड़ी।

इस समय के दौरान, राजस्थान के राजपूताने ने अपनी सांस्कृतिक धरोहर और परंपराओं को सहेजने का कार्य किया। महलों, किलों और धार्मिक स्थलों का निर्माण इस दौरान हुआ। यही धरोहर आज के राजस्थान की पहचान है।

स्वतंत्रता संग्राम और राजपूताना की भूमिका

जब 20वीं शताब्दी में भारत के स्वतंत्रता संग्राम की चिंगारी भड़की, तो राजपूताने के राजाओं और यहां की जनता ने भी इस संघर्ष में भाग लिया। महाराणा मेवाड़, जोधपुर के महाराजा उम्मेद

सिंह, बीकानेर के महाराजा गंगा सिंह, और जयपुर के महाराजा मानसिंह जैसे शासकों ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इन राजाओं ने न केवल अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष किया, बल्कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेताओं के साथ मिलकर स्वतंत्रता संग्राम को आगे बढ़ाने का प्रयास किया। महाराणा मेवाड़ ने महात्मा गांधी और सरदार वल्लभभाई पटेल जैसे नेताओं से संपर्क स्थापित किया और स्वतंत्रता के समर्थन में अपनी आवाज बुलंद की। जवाहरलाल नेहरू ने कहा था, *"राजपूताने के राजा और जनता ने स्वतंत्रता संग्राम में अपना अमूल्य योगदान दिया है। उनकी यह निष्ठा और देशभक्ति अद्वितीय है।"*

राजस्थान का गठन और एकीकरण

1947 में भारत की आजादी के बाद, राजपूताना के इन छोटे-बड़े राज्यों को एकीकृत करना एक बड़ी चुनौती थी। सरदार वल्लभभाई पटेल ने इस एकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 30 मार्च 1949 को जयपुर, जोधपुर, बीकानेर और जैसलमेर के विलय के साथ आधुनिक राजस्थान की स्थापना हुई। इस प्रकार, 'राजपूताना' से 'राजस्थान' बनने की यात्रा पूरी हुई।

देश में आजादी की घोषणा के बाद से राजपूताना के देसी रियासतों के मुखियाओं में स्वतंत्र राज्य के रूप में अपनी सत्ता बरकरार रखने की होड़ लगी हुई थी. सत्ता की होड़ के कारण राजस्थान के गठन का होना बड़ा ही मुश्किल काम था. देसी रियासतों के शासक अपने रियासतों के स्वतंत्र भारत में विलय को दूसरी प्राथमिकता दे रहे थे. उनकी मांग थी कि वह सालों से खुद अपने राज्य का शासन चलाते आ रहे हैं, उन्हें इसका दीर्घकालीन अनुभव है. इस कारण उनकी रियासतों को स्वतंत्र राज्य का दर्जा दिया जाए। सरदार वल्लभभाई पटेल ने इस एकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 18 मार्च 1948 को राजस्थान के एकीकरण की प्रक्रिया शुरू हुई, जो कुल 7 चरणों में 1 नवंबर 1956 को पूरी हुई। 8 वर्षों तक चले प्रयास और साथ विभिन्न चरणों के पश्चात राजस्थान का वर्तमान स्वरूप उभर कर सामने आया।

राजस्थान का नामकरण इस आधार पर किया गया, क्योंकि यह 'राजाओं का स्थान' है। राज्य के गठन के समय कई राजाओं ने अपने महलों और किलों को देश की धरोहर के रूप में स्थापित किया, ताकि उनकी संस्कृति और गौरव सजीव रह सके।

संघर्ष से विकास की ओर

राजपूताना से राजस्थान तक की यात्रा केवल युद्धों और राजनीतिक एकीकरण की नहीं, बल्कि संस्कृति, कला और सभ्यता की उन्नति की भी कहानी है। यहाँ की स्थापत्य कला - जैसे आमेर का

किला, चित्तौड़गढ़ किला, और उदयपुर का सिटी पैलेस - राजपूत स्थापत्य का अद्‌वितीय उदाहरण हैं। जैसा कि कहा जाता है, "राजस्थान का कण-कण शौर्य, संस्कृति और सौंदर्य की कहानियाँ कहता है।"

राजस्थान आज भारतीय पर्यटन में एक प्रमुख स्थान रखता है। राज्य के विकास ने इसे एक समृद्ध और आधुनिक राज्य में परिवर्तित किया है, जबकि इसकी ऐतिहासिक धरोहर आज भी जीवंत है।

निष्कर्ष

राजपूताना से राजस्थान तक की यात्रा संघर्ष, वीरता, और सांस्कृतिक धरोहर की कहानी है। यह यात्रा न केवल स्वतंत्रता के लिए किए गए युद्‌धों की गाथा है, बल्कि यह राजस्थान की आत्मा की कहानी है, जो आज भी अपनी मिट्टी, संस्कृति और सम्मान के लिए जानी जाती है। जैसा कि जेम्स टॉड ने कहा था:

"The soil of Rajasthan has been drenched with blood, but the spirit of its people remains unbroken."

- शालिनी अग्रवाल, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

रणथंभौर की रानी (T-16)

एक समय रणथंभौर का गौरव रही मछली (टी-16) उर्फ "लेडी ऑफ द लेक", शाही बाघिन थी, जिसका 18 अगस्त 2016 को निधन हो गया। दुनिया में सबसे ज्यादा फोटो खींची जाने वाली बाघिन के रूप में जानी जाने वाली मछली न केवल खूबसूरत थी, बल्कि एक शक्तिशाली बाघिन भी थी, जिसकी अपने क्षेत्र पर मजबूत पकड़ थी, जिसमें रणथंभौर के महल, झीलें और रणथंभौर के किले शामिल थे।

छतरियों और गुंबदों को आश्रय के रूप में इस्तेमाल करने और झीलों को अपने नियंत्रण में रखने के कारण, मछली के रणथंभौर पर प्रभुत्व का अंदाजा आसानी से लगाया जा सकता है। मछली के क्षेत्र का यह 350 वर्ग मील का क्षेत्र पार्क का सबसे बड़ा क्षेत्र था, और सबसे खूबसूरत भी।

मछली टी-16 को क्या खास बनाता है?

रणथंभौर के 62 बाघों में से मछली को जो चीज सबसे खास बनाती है, वह है इंसानों के साथ उसका सहज व्यवहार और कैसे वह लेंसमैन (और महिलाओं) को अपनी खूबसूरती से विस्मित कर देती है। वह बहुत होशियार भी थी। कई बार वह पर्यटकों के वाहनों का लाभ उठाकर उनका पीछा करती थी और शिकार करती थी। उसके जीन पूरे इलाके में फैल गए हैं; उसकी दो मादा शावकों को सरिस्का टाइगर रिजर्व में स्थानांतरित कर दिया गया ताकि उसे बड़ी बिल्लियों से फिर से आबाद किया जा सके। लाइफटाइम अवॉर्ड्स जैसी उपलब्धियों ने उसके नाम को और भी ऊंचा कर दिया है।

मछली, जिसका शाब्दिक अर्थ है मछली - क्या यह बाघिन के लिए अजीब नाम नहीं है? उसका नाम मछली रखने के पीछे का कारण उसके चेहरे के बाएं कान पर मछली के आकार का निशान था। साथ ही, उसे यह नाम अपनी माँ से विरासत में मिला था।

1997 के मानसून के महीनों में जन्म लेने के बाद से ही मछली एक दबंग शावक रही है। दो साल की उम्र में, यानी 1999 में, इस खूंखार बाघिन ने खुद ही शिकार करना शुरू कर दिया, जिससे उसकी माँ से अलग होने के संकेत मिलने लगे।

इसके तुरंत बाद, मछली ने अपनी माँ के इलाके का एक हिस्सा हासिल कर लिया, और यहीं उसने अपने शासनकाल का अधिकांश समय बिताया। कुछ वर्षों के बाद, उसने तीन शावकों को जन्म दिया- एक मादा (सुंदरी - टी-17) और दो नर (ब्रोकन टेल और स्लैंट ईयर), "बांस राम" नामक एक बड़े नर बाघ के साथ संभोग करके। दिसंबर 2001 के अंत तक दोनों शावक मछली से अलग हो गए और फिर उसने "निक इयर" नामक नर बाघ के साथ संभोग किया। बांस राम की वृद्धावस्था में मृत्यु हो गई थी, जब ब्रोकन टेल और स्लैंट इयर अभी भी मछली के साथ थे और निक इयर ने उनके इलाके पर कब्ज़ा कर लिया था।

अप्रैल 2002 तक, मछली ने अपने दूसरे शावकों को जन्म दिया, जिनके नाम झुमरू (नर) और झुमरी (मादा) थे। 2004 के अंत तक, मछली ने एक और नर बाघ के साथ संभोग किया जिसे एक्स-मेल के नाम से जाना जाता है, और मार्च 2005 के आसपास, उसने फिर से दो शावकों को जन्म दिया, जिनके नाम शर्मीले (जिसका हिंदी में मतलब शर्मीला होता है) और बहादुर (बहादुर) थे।

मछली: शक्तिशाली, प्रभावशाली और क्रूर

मादा बाघिन होने के बावजूद, उसका स्वभाव हमेशा से ही दबंग और शक्तिशाली रहा है, जो कई बार नर बाघों को भी मात दे देता था। वह हमेशा अपने बच्चों के प्रति सुरक्षात्मक रही है। उसकी क्रूरता कुछ ऐसी थी जिसके साथ वह जन्मजात थी, और यह उसके बारे में दर्ज घटनाओं की श्रृंखला से देखा जा सकता है। इनमें से एक कहानी 14 फुट लंबे मगरमच्छ के साथ उसकी लड़ाई की थी जिसने इतिहास भी रच दिया। दर्शकों ने इसे ऐतिहासिक मुठभेड़ बताया है।

मछली सबसे ज़्यादा फ़ोटो खींची जाने वाली बाघिन होने के लिए भी मशहूर थी। पिछले कुछ सालों में, वह वन्यजीवों पर कई वृत्तचित्रों, लघु फिल्मों, पत्रिकाओं, किताबों और शोध पत्रों का विषय रही है। वास्तव में, मछली और रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान पर आधारित कई किताबों को संरक्षण और व्यापक राजस्थान अर्थव्यवस्था में उनके योगदान के लिए TOFT लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड मिला है।

रणथम्भौर की रानी मछली की मृत्यु

हालांकि, करीब पांच साल पहले, मछली पर उम्र का असर दिखने लगा और वह धीरे-धीरे अपना इलाका खोने लगी। यहां तक कि मरने से पहले उसके दांत भी गिर गए। उसका अंतिम संस्कार राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण प्रोटोकॉल (एनटीसीए) के अनुसार किया गया। मछली की कहानी हमेशा जिंदा रहेगी।

बाघिन मछली के बारे में रोचक तथ्य

- 'टाइग्रेस क्वीन ऑफ रणथंभौर', 'लेडी ऑफ द लेक्स' और 'क्रोकोडाइल किलर': ये कुछ ऐसी उपाधियाँ हैं जो उन्हें अपने जीवनकाल में मिलीं।
- 1998 और 2009 के बीच, मछली की असाधारण लोकप्रियता से भारत सरकार को लगभग 100 मिलियन अमेरिकी डॉलर की कमाई करने में मदद मिली।
- संरक्षण और पर्यटक आकर्षण में उनके योगदान के कारण उन्हें "लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड" से सम्मानित किया गया।
- भारत सरकार ने मछली के पारिस्थितिक और आर्थिक योगदान के सम्मान में एक स्मारक डाक कवर और टिकट जारी किया।
- मछली की मृत्यु 20 वर्ष की आयु में हुई, जिसके कारण वह जंगल में जीवित रहने वाली दुनिया की सबसे उम्रदराज बाघिन बन गई। यह आयु जंगल में रहने वाले बाघों की औसत आयु (10 से 15 वर्ष) से अधिक है।
- मछली पर बनी फिल्म "द वर्ल्ड्स मोस्ट फेमस टाइगर" ने 66वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार में राष्ट्रीय पुरस्कार जीता।

\- सारांश गुप्ता (कनिष्ठ अनुवादक)

मुंशी प्रेमचंद

प्रेमचन्द्र का जन्म 31 जुलाई सन् 1880 ई. को उत्तर प्रदेश वाराणसी जनपद के लमही गाँव में एक कायस्थ परिवार में हुआ था। उनकी माता का नाम आनन्दी देवी तथा पिता का नाम मुंशी अजायबराय था। सात वर्ष की बाल्यावस्था में उनकी माता का स्वर्गवास हो गया। पन्द्रह वर्ष की आयु में उनका पहला विवाह कर दिया गया। सोलह वर्ष की आयु में उनके पिता की भी देहान्त हो गया। कठिन पारिवारिक पृष्ठभूमि के कारण उनका प्रारम्भिक जीवन संघर्षमय रहा। सन् 1906 ई. में उनका दूसरा विवाह शिवरानी देवी से हुआ जो बाल-विधवा थीं। वे सुशिक्षित महिला थी जिन्होंने कुछ कहानियाँ और "प्रेमचंद घर' में शीर्षक पुस्तक भी लिखी। उनकी तीन सन्तान हुई- श्रीपत राय, अमृत राय और कमला देवी श्रीवास्तव।

प्रेमचन्द्र की आरम्भिक शिक्षा फारसी में हुई। ट्यूशन करके 1898 ई. में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद वे एक स्थानीय विद्यालय में शिक्षक नियुक्त हो गए। स्कूल मास्टर की नौकरी के साथ ही उन्होंने पढ़ाई जारी रखी। सन् 1910 ई. में अंग्रेजी, दर्शन, फारसी और इतिहास लेकर एफ.ए. इण्टर किया और सन् 1919 ई. में अंग्रेजी, फारसी और इतिहास लेकर बी.ए. किया। स्नातक करने के बाद सन् 1921 ई. में गोरखपुर में स्कूलों के डिप्टी इंस्पेक्टर पद पर नियुक्त हुए।

महात्मा गांधी के नेतृत्व में असहयोग आन्दोलन के दौरान सरकारी नौकरी छोड़ने के आह्वान पर स्कूल इंस्पेक्टर पद से 23 जून सन् 1921 ई. को त्यागपत्र दे दिया। कुछ समय कानपुर के मारवाड़ी स्कूल में अध्यापन किया फिर काशी विद्यापीठ में प्रधान अध्यापक नियुक्त हुए।

इसके बाद उन्होने लेखन को अपनी आजीविका बना लिया। मर्यादा, माधुरी आदि पत्रिकाओं में वे संपादक पद पर कार्यरत रहे। इसी दौरान उन्होंने प्रवासीलाल के साथ मिलकर सरस्वती प्रेस भी खरीदा तथा हंस और जागरण निकाला। प्रेस उनके लिए व्यावसायिक रूप से लाभप्रद सिद्ध नहीं हुआ। सन् 1933 ई. में अपने ऋण से उऋण होने के लिए प्रेमचन्द फिल्मों की पटकथा लिखने बम्बई गए जहाँ लगभग तीन वर्ष तक रहे। यही पर आठ हजार रूपये मासिक वेतन रूप में काम करने का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

फ़िल्म नगरी प्रेमचन्द को रास नहीं आई। वे एक वर्ष का अनुबन्ध भी पूरा नही कर सके और दो महीने का वेतन छोड़ कर सन् 1935 ई. में बनारस लौट आए। जीवन के अन्तिम दिनों तक वे साहित्य सृजन में लगे रहे। उनका स्वास्थ निस्तर बिगड़ता गया। लम्बी बीमारी के बाद 2 अक्टूबर सन् 1936 ई. को उनका निधन हो गया। "महाजनी सभ्यता'' उनका अंतिम निबन्ध, "साहित्य का उद्देश्य' अन्तिम व्याख्यात, 'कफन' अन्तिम कहानी, "गोदान" अन्तिम पूर्ण उपन्यास तथा ''मंगलसूत्र" अन्तिम अपूर्ण उपन्यास माना जाता है।

प्रेमचन्द की स्मृति में भारतीय डाकतार विभाग की ओर से 30 जुलाई 1980 को उनकी जन्मशती के अवसर पर 30 पैसे मूल्य का एक डाक टिकट जारी किया गया।

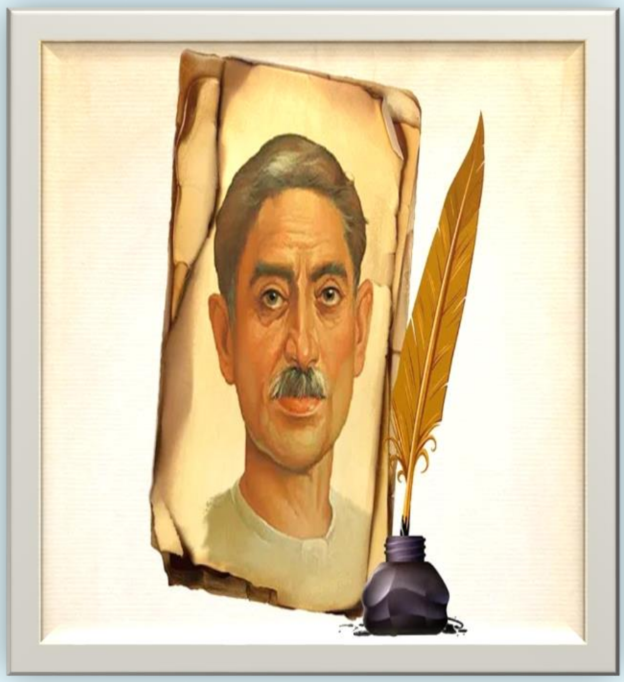

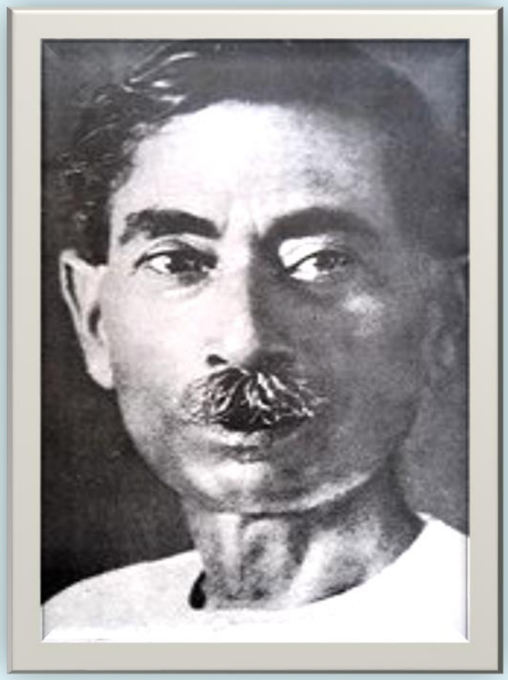

<u>साहित्यिक परिचय</u>

मुंशी प्रेमचन्द को बचपन से ही पढ़ने में बहुत रूचि थी। 13 वर्ष की अल्पायु में ही उन्होने तिलिस्म-ए-होशरुबा पढ़ लिया और उन्होने उर्दू के मशहूर रचनाकार रतननाथ 'शरसार' मिर्जा हादी रुस्पा और मौलाना शरूर के उपन्यास को पढ़ लिया था।

कहानी:- जून 1900 में प्रेमचन्द का पहला कहानी संग्रह सोने वतन नाम से प्रकाशित हुआ। इसी संग्रह की पहली कहानी 'दुनिया का सबसे अनमोल रत्न' को उनकी पहली प्रकाशित कहानी माना जाता ही अन्य कहानियाँ में 'मानसरोवर', 'अनाथ लड़की', 'अपनी करनी', (अमृत अलग्योझा), 'आखिरी तोहफा', 'आखिरी मंजिल', 'आत्म-संगीत', 'आत्माराम', 'आखिरी तोहफा', 'एम्प्रेस', 'कप्तान साहब', 'कर्मो का फल', "जुलूस', "ठाकुर का कुआँ" आदि है।

सन् 1925 ई. में "निर्मला" प्रकाशित हुआ। सन् 1926 ई. मे "कायाकल्य" प्रकाशित हुआ। सन् 1926 ई. में ही "अंहकार" प्रकाशित हुआ। सन् 1927 में "प्रतिज्ञा" प्रकाशित हुआ। सन् 1928 ई. में "गबन" प्रकाशित हुआ। सन् 1932 ई. में "कर्मभूमि" प्रकाशित हुआ। सन् 1938 ई. में "गोदान" प्रकाशित हुआ। यह उनका अन्तिम पूर्ण उपन्यास था।

- कुसुमलता, लेखापरीक्षक

<u>डिजिटल अरेस्ट</u>

साइबर क्राइम अर्थात् कम्प्यूटर, इंटरनेट की मदद से अपराध; जिसमें सोशल मिडिया, ई-मेल, मैसेज, साइट या कम्प्यूटर, फोन हैंग करके किसी की निजी जानकारी की चोरी करना तथा उसकी मदद से धोखाधड़ी, अश्लीलता, ठगी जैसे अपराध किए जाते हैं। साइबर क्राइम के नए-नए तरीके सामने आते रहते हैं। इसी कड़ी में आजकल नया शब्द "डिजिटल अरेस्ट" सुनने को मिल रहा है। फिजिकल अरेस्ट को तो सब जानते है; लेकिन ये डिजिटल अरेस्ट क्या हैं?

<u>डिजिटल अरेस्ट-</u>

डिजिटल फ्रोड का एक नया तरीका है, जिसे साइबर ठग अपनाते है। इसमे साइबर ठग स्वयं को पुलिस ऑफिसर, सी.बी.आई. ऑफिसर या अन्य किसी लॉ इन्फोर्समेंट ऑफिसर के रूप में प्रस्तुत करते हैं। ये अपना बैकग्राउण्ड भी पुलिस स्टेशन या अन्य कानूनी संस्था के रूप में सेटअप करते हैं। जहाँ सरकारी एजेंसी के लोगो (LOGO), वर्दी का उपयोग किया जाता है, बाकी लोगों को भी स्टाफ की तरह अपना काम करते हुए दिखाया जाता है।

साइबर ठग ऑफिसर के रूप में कॉल करके आपके आधार कार्ड, सिमकार्ड या बैंक अकाउंट के किसी गैर-क़ानूनी कार्य जैसे हयूमन ट्राफिकिंग, मनी लोंडरिंग, अवैध व्यापर, नकली पासपोर्ट, वीजा सप्लाई या अन्य किसी अपराध से लिंक होने कि सूचना देते है। फर्जी अरेस्ट वारंट तथा अपराध में शामिल होने के दस्तावेज भेजते हैं। कभी-कभी आपके दोस्तों और रिश्तेदारों को कॉल करके डिजिटल अरेस्ट, अकाउंट फ्रिज होने, बड़ा केस होने की आशंका दर्शाते हुए एक डर का माहौल पैदा करते हैं। कई बार अलग-अलग एजेंसी के ऑफिसर के रूप में अलग-अलग नम्बर से कॉल आते हैं।

इसके बाद ये आपसे विडियों कॉल से कनेक्ट हो जाते है। आपके डिजिटली अरेस्ट होने का दावा करते हैं। ये कहते हैं कि “आपके खिलाफ इन्वेस्टिगेशन चल रही है एंड नाउ यू आर इन डिजिटल अरेस्ट, आप से अलग-अलग एजेंसियों के ऑफिसर पूछताछ करेंगे।” किसी से भी मिलने, बातचीत करने की इजाजत नहीं दी जाती है। 24 घन्टे कैमरे के सामने रहने तथा कॉल म्यूट ना करने का दबाव बनाया जाता है। विडियो कोल डिस्कनेक्ट करने पर फिजिकल अरेस्ट की धमकी दी जाती है। डर का माहौल तथा सेन्स ऑफ अरजेन्सी क्रिएट की जाती है।

आपके अपराध में शामिल न होने के लिए कहने पर डिजिटल FIR के नाम पर बेसिक इन्फोर्मेशन, आधार कार्ड नम्बर की जानकारी ली जाती है। बैंक अकाउंट में अवैध लेन-देन की बात कहकर बैंक अकाउंट डिटेल्स ली जाती है। जमानत या आप को केस से फ्री करने के नाम पर बड़ी राशि की मांग की जाती है।

सुनने में तो "डिजिटल अरेस्ट" बड़ा अजीब सा व मजाकिया लग रहा है; लेकिन ये हो रहा है, इंडिया में भी और इंटरनेशनल लेवल पर भी इसके कई मामले सामने आ रहे हैं जैसे-

- हरियाणा के फरीदाबाद की अनन्या मंगला जो 23 साल की लड़की है, से कस्टम ऑफिसर बनकर बात की गई तथा ह्यूमन ट्राफिकिंग में इन्वोल्व होने के चार्जेज लगाए गए 17 दिन के डिजिटल अरेस्ट के साथ 2.5 लाख रूपये ठगे गए।
- जयपुर की एक बैंक मैनेजर को उनके नाम से फर्जी SIM कार्ड चलने तथा उससे अनैतिक गतिविधियाँ होने जानकारी दी गई। फोन में स्काईव सॉफ्टवेयर इनस्टॉल करवाकर 5 घंटे कैमरे के सामने रखा तथा 17 लाख की ठगी की।
- मध्यप्रदेश के इंदौर के PHD स्कॉलर जयंत के बैंक खाते में अवैध लेनदेन का आरोप लगाकर बैंक डिटेल्स ली गई तथा 1 लाख रुपये ट्रांसफर किए गए।
- दिल्ली की बुजुर्ग महिला कृष्णादास गुप्ता को 12 घंटे तक पूछताछ के नाम पर डिजिटल अरेस्ट कर 83 लाख ठगे।
- नोएडा की एक इंजीनियर महिला के पास ठगों ने पुलिस, कस्टम तथा क्राइम ब्रांच के अधिकारी बनकर विडियो कॉल किया। महिला को डिजिटली अरेस्ट वॉरंट, कोंफिडेंशियल सर्टिफिकेट तथा हाईकोर्ट के सिटिंग जज का भी एक डोक्यूमेंट भेजा। मनी-लॉन्डरिंग के केस में इन्वोल्व होने की धमकी देकर प्रोपर्टी, ज्वैलरी तथा बैंक खातों की डिटेल्स ली गई। पूछताछ के नाम पर 10 घन्टे डिजिटल अरेस्ट रखा तथा 11 लाख रुपये ठगे।

इस साइबर फ्रोड से बचाने के लिए सरकार द्वारा कुछ कदम उठाए गए है, जैसे:-

- गृह मंत्रालय ने 1000 से अधिक फर्जी स्काईब ID को ब्लॉक किया है।
- इंडियन साइबर क्राइम कोर्डिनेशन सेंटर (I4C) तथा डिपार्टमेंट ऑफ टेलिकम्यूनिकेशन (DOT) मिलकर इंटरनेशनल फ्रोड कॉल को रोकने का प्रयास कर रहे हैं।
- I4C माइक्रोसॉफ्ट के साथ मिलकर "लॉ इन्फोर्समेंट एजेंसीज" के लोगोज के मिसयूज को रोकने का कार्य कर रहा है।
- I4C ने साइबर दोस्त तथा इन्स्टाग्राम जैसे सोशल मिडिया प्लेटफॉर्म पर अवेरनेस के विडियो पोस्ट किए है।

सरकारी प्रयासों के बावजूद भी खुद की समझदारी, अवेयरनेस तथा साइबर फ्रोड के तरीकों तथा कानूनी एक्शन की प्रक्रिया को जानकर ही इस प्रकार के फ्रोड से बचा जा सकता है:

- ❖ कोई भी जांच एजेन्सी कॉल पर धमकी नहीं देती है तथा ना ही पैसों की मांग करती है।
- ❖ सरकारी अधिकारी कानूनी प्रक्रिया का पालन करते है अतः बिना डरे पुलिस को सूचना दे।
- ❖ CBI, ED, पुलिस ऑफिसर बताने वाले से सवाल करें तथा एजेंसी के नम्बर पर कॉल करके जानकारी दें।
- ❖ रुपये का लेन-देन तथा बैंक डिटेल्स भुलकर भी शेयर ना करें ।
- ❖ पासवर्ड बार- बार बदले, डिवाइस में एक अच्छा एन्टीवायरस डाउनलोड करके रखें ।
- ❖ डिवाइस का सॉफ्टवेयर अपडेट करते रहें ताकि डिवाइस लेटेस्ट सिक्योरिरी मैकेनिज्म में रहे।
- ❖ अनओथोराइज्ड सोर्स से कुछ भी डाउनलोड ना करें। किसी भी अनजान लिंक पर क्लिक ना करें।
- ❖ बिना जांच के सोशल मिडिया, मेल या मैसेज पर पर्सनल इन्फोर्मेशन शेयर ना करें।

किसी भी फ्रोड की आशंका होने पर:-

- संचार साथी वेबसाइट के "CHAKSHU" पोर्टल पर शिकायत कर सकते हैं।
- Helpline number - 1930 पर कॉल करके शिकायत कर सकते है।
- http:// www. Cybercrime.gov.in पर शिकायत कर सकते हैं।

- सुमित्रा,
ऑडिट क्लर्क

अंतर्मन के साथ

देखा है न जाने कितने चेहरों को
अब हर चेहरा पहचाना लगता है।

जिंदा लोगो को भूख मार देती है,
मरे हुए लोगों को खाना लगता है।

मजनूं को लोग पागल करार देते हैं
उसे दुनियाँ पागलखाना लगता है।

हजार वहम पाले हो कभी बेवजह,
तो घर भी उसे दवाखाना लगता है।

टूटते तारों से ख्वाईशें मांगने वाले,
सितारों पर कैसे निशाना लगता है।

भटकता फिरता यूं बंजारों की तरह,
पागल लगता है या दीवाना लगता है।

सीख रहा है हुनर मुस्कराने का रोज,
जहन में गमों का खजाना लगता है।

बातों को सुनकर महसूस करना भी,
किसी की दुआ को कमाना लगता है।

सुनता है मुस्कुराता है सीखता है,
इक शख्स पुराना जमाना लगता है।

भरी भीड़ में मुस्कराता यह आदमी
अपना तन्हा फिर बेगाना लगता है।

- वंशिका भदाला,
अतिथि रचनाकार

अनुष्का

हिमालय की पहाड़ियों से शायद उसका आना हुआ था, ठीक किस जगह से यह पता नहीं! बिखरें हुए बाल, आँखों पर बार-बार आकर उसे परेशान करते पर वो अपने हाथों से ठीक करती रहती। हमेशा चेहरे पर हल्की सी मुस्कान और आँखों में जो मासूमियत थी वो उसके चेहरे पर साफ नजर आती थी। अभी ठीक से बोलना सीखा ही था परंतु हर बात बहुत ही प्यार से और तमीज से बोलना अच्छे से जान चुकी थी। कुछ इस तरह की हैं अनुष्का, अभी तो स्कूल जाने की उम्र हुई ही थी पर लगता था अनुष्का को सब आता था।

अनुष्का के माता-पिता शायद किसी जगह खाना बनाने का काम करते थे। अपने माता-पिता के काम पर जाने के बाद अनुष्का अपनी दादी के साथ खेलती रहती थी। हमारी अनुष्का से पहली मुलाकात तब हुई, जब मेरी माताजी घर के बाहर लगे पेड-पौधों को पानी दे रही थी। अचानक अनुष्का आई, मुँह में अपनी टी-शर्ट को चबाते हुए कहती हैं, "आंटी, नमस्ते।" माताजी ने भी कहा, "नमस्ते बेटा" इतने में अनुष्का की दादी उसे ढूँढते हुए आयी और बोली, "अरे कहाॅ घूमती रहती हैं!" दरअसल अनुष्का दो या तीन घर छोड कर किसी घर में किराये पर रहती थी। मेरी माताजी ने कहा, "रूको बेटा, ये बिस्किट ले जाओ।" अनुष्का ने बडी ख़ुशी से बिस्किट लिया और नमस्ते करके अपनी दादी के साथ घर को लौट गयी। अब ये सिलसिला रोज शुरू हो गया और अनुष्का रोज घर आती और मेरी माताजी से काफी बाते करती। वो अक्सर बिस्किट लेने आती तो वो घर के मुख्य गेट पर चढ जाती और आवाज लगाती।

मैने उसे पहली बार गेट पर चढ़ा हुआ ही देखा, जब मै दफ्तर से घर को आया। मैने कहा, "बेटा, नीचे उतरो, लग जायेगी।" अनुष्का बहुत प्यार से मुस्कराई, नीचे उतरी और बोली, "आँटी कहाॅ हैं ?" मैने कहाॅ, "अभी बुलाता हूँ।" मेरी माताजी आई और बिस्किट दिया, अनुष्का ने बहुत बाते की। लगा ही नहीं की यह बच्ची मुझसे पहली बार मिली हैं। अब हर रोज वो आती और आवाज लगाती, "अंकल, आँटी, भैया।" अब वो मेरा अलार्म भी बन चुकी थी, सुबह आकर उसका आवाज लगाना। शाम को दफ्तर से आते ही उसका आना और हमारे घर में खेलते रहना। अब वो हमारे ही घर का हिस्सा बन चुकी थी।

हमेशा उसका हँसते रहना, बहुत ही तमीज से बात करना। जब भी वो बिस्किट लेती और घर जाती तो हाथ जोडकर, झुककर नमस्ते करती और बहुत प्यार से बोलती, "नमस्ते।" एक दिन मैं और मेरी माताजी कही जा रहे थे। हम थोडी जल्दी में थें, अनुष्का घर के सामने किराने की दुकान पर बैठी वैफर्स खा रही थी। हमें देख कर बहुत खुश हुई, चूँकि हम कहीं जा रहे थे तो हमे वो हाथ हिला कर बाय-बाय करने लगी। हम घर आ गये, सब कुछ बहुत सामान्य था। दो चार दिन बीते, अनुष्का हमारे घर नहीं आ रही थी तो हमे लगा अनुष्का किसी कारणवश नहीं आ रही हैं। अगले दिन हम सामने वाली किराने की दुकान पर कुछ सामान लेने गये तो दुकान में बैठी आँटी ने मेरी माताजी से कहा, "आपकी बेटी कहाँ हैं आजकल ?"; माता जी ने कहा, "पता नहीं, आ नहीं रही कुछ दिनों से शायद कही गये होंगे!"

आँटी ने हमें बताया, “वो लोग तो तीन-चार दिन पहले यहॉ से खाली करके किसी दूसरे शहर चले गये।” ये सूनकर ना जाने क्यों हमें ऐसा लगा जैसे कोई अपना हमें छोड़कर कहीं दूर चला गया। माताजी ने यह बात आकर घर पर बतायी और उनकी आँखों से आँसू बह निकले। सभी यह बात सुन हतप्रभ रह गये। हालाँकि हमें पता था कि एक दिन अनुष्का कहीं और चली जायेगी लेकिन मेरे परिवार के लिए यह बहुत ही भाव विभोर करने वाला क्षण था।

धीरे-धीरे सब सामान्य होता गया परंतु आज भी हमारे पूरे परिवार को अनुष्का की हर बात याद आती हैं। हम जब कभी भी अनुष्का की तस्वीरे या वीडियों देखते हैं तो अपने आप हमारी आँखें अनुष्का को याद करते हुए नम हो जाती हैं। अब जहॉ कही भी अनुष्का हो बहुत प्रसन्न रहें और भविष्य में वो एक अच्छा मुकाम हासिल करें। हमारा किसी से लगाव हो जाना हमारी इंसानियत दिखाता हैं।

यहीं जीवन हैं कि सब कुछ स्थायी नहीं होता परंतु हमें हमेशा प्रसन्न रहना चाहिए। वो प्यारी सी बच्ची ‘‘अनुष्का‘‘ भी हमें यहीं सीखा गई।

- राहुल भदाला (लेखापरीक्षक)

.

***

संघर्ष

पाकिस्तान में रह रहे सभी हिन्दू परिवारों के पैरों तले जमीन तब खिसक गयी थी जब 1947 के बंटवारे की घोषणा की गयी। पाकिस्तान में रह रहे ज्यादातर सिन्धी तथा पंजाबी परिवारों को अपने अस्तित्व से ज्यादा अपनी बहन-बेटियों की इज्जत बचाने की चिंता सताए जा रही थी। पाकिस्तान में सैकड़ों एकड़ जमीन के स्वामी खुद को ठगा सा महसूस कर रहे थे।

मेरी माँ की उम्र उस समय केवल 7 वर्ष थी तथा पिता की उम्र 15 वर्ष थी। मेरी माँ को उनकी दो बड़ी बहनों के साथ नाना-नानी तथा बुआओं को दादा-दादी तथा अन्य बड़े बुजर्गों द्वारा बोरियों में बंद कर कर हिंदुस्तान लाया गया। सभी परिवारजन खुद को बहुत खुशनसीब समझते थे कि वह अपनी इज्जत बचा कर हिन्दुस्तान आ गए।

पाकिस्तान से आये लोगों को हिन्दुस्तान में पहले तो रिफ्यूजी कैम्पों में रखा गया फिर पाकिस्तान में उनकी सैंकड़ों एकड़ जमीन के बदले एक 100-200 गज जमीन में बना हुआ मकान मुआवजे के तौर पर दे दिया गया। उस समय आसानी से सभी पढ़े लिखे लोगों को सरकारी नौकरी मिल जाती थी, तो मेरे नाना और दादा जी को भी मिल गयी। नौकरियों तथा व्यापार में भी पाकिस्तान से आये लोगों को रिफ्यूजी नाम का ताना मारकर संबोधित किया जाता था। मेहनत तो रंग लाती है, नौकरियों में रिफ्यूजी लोगों को पदोन्नतियां मिलने लगीं तथा व्यापार भी चल निकले।

व्यापार में तो चीनी का व्यापार करने वाला एक मारवाड़ी सेठ सिन्धी व्यापारी से आश्चर्यचकित होकर पूछता है कि भाई तुम और मैं एक ही मूल्य पर चीनी खरीद कर लाये तो तुम उसी मूल्य पर चीनी बेचकर लाभ कैसे कमाओगे। सिन्धी दुकानदार का जवाब था कि भाई साहब चीनी तो क्रय मूल्य पर ही बेच दी पर बोरी के पैसे तो बच रहे हैं।

इस पर मारवाड़ी सेठ ने सिन्धी सेठ के चरण पकड़ते हुए कहा, "सच में आप मेरे गुरु बनने लायक हो तथा आज तक के मेरे व्यवहार के लिए मुझे क्षमा करना।" कड़ी मेहनत करते हुए मेरे नाना स्टेशन मास्टर तथा दादा हेड मास्टर बन गये परन्तु उस समय अधिक संताने होने के कारण परिवार का गुजारा जैसे तैसे ही चल पाता था। ऐसे ही एक परिवार के जीवन पर आधारित लेख निम्न वर्णित है।

5 भाइयों तथा 3 बहिनों के एक परिवार में सबसे बड़ा पुत्र होने के कारण विष्णु (काल्पनिक नाम) सबकी नजरों में इसलिए था कि वह किसी अच्छी सरकारी नौकरी में लग जायेगा तो भाई बहनों की पढाई हो सकेगी। वर्ष 1957 के आस पास उसकी रेलवे तथा हिमाचल प्रदेश में सरकारी नौकरियों के नियुक्ति पत्र आ गए परन्तु असमंजस यह था कि अजमेर राजस्थान के निवासी होते हुए कौन सी सेवा की जाये। रेलवे का पे स्केल रूपये 150-225 था जबकि हिमाचल प्रदेश सरकार का रूपये 155-230 था, फिर भी इस 5 रूपये के अंतर के पीछे उन्होंने हिमाचल प्रदेश में नौकरी ज्वाइन की।

अपनी तनख्वाह में से घर खर्च निकालते हुए बाकि सारा पैसा विष्णु द्वारा अपने पिताजी को भेज दिया जाता था। शादी होने तथा बच्चों (3 पुत्रियों तथा 1 पुत्र) की शिक्षा एवं रहन सहन के पश्चात् भी विष्णु द्वारा पैसा पिताजी को भेजा जाता था। विष्णु पर ईमानदारी का ऐसा भूत सवार था कि उसने अपने भ्रष्ट साथियों तथा अधिकारियों के काले कारनामों की शिकायत लिखी । विष्णु द्वारा लिखी शिकायत (जो कार्यालय अध्यक्ष को डाक द्वारा भेजी जानी थी) की भनक कार्यालय में लग गयी। उक्त शिकायत को डाक के डिब्बे से भ्रष्ट साथियों तथा अधिकारियों द्वारा निकलवा लिया गया तथा पुलिस से मिलीभगत कर विष्णु को ही फँसा दिया गया।

इस घटना से विष्णु बहुत ज्यादा हताश हो गया तथा उसका मानसिक संतुलन गड़बड़ा गया। ऐसा होने से बच्चों की परवरिश का पूरा दायित्व उसकी पत्नी पर आ गया। हिमाचल प्रदेश में सेवा के दौरान विभिन्न स्थानों पर तबादलों के कारण बच्चों की पढाई बहुत प्रभावित होती थी जबकि दूसरी तरफ विष्णु के भाइयों तथा बहनों की पढाई में सहयोग मिलने से उसके दो भाईयाँ ने कृषि में स्नातक होने तथा अन्य दो भाइयों ने स्नातक होने के पश्चात् राजस्थान सरकार में नौकरी हासिल कर ली और अजमेर में घर के हालात सुधरते गए। इधर विष्णु के घर के हालात थोड़े बिगड़ने लगे चूंकि किराये का मकान, चारों बच्चों की पढ़ाई और कमाने वाला सिर्फ एक, तो गुजारा कैसे हो ? अपने गृह नगर अजमेर आने हेतु भी विष्णु के परिवार को 2-3 वर्षों का इंतजार करना पड़ता था।

विष्णु की पत्नी तथा बेटियां स्वेटर बुनने, ट्यूशन पढ़ाने आदि काम कर घर के हालात को थोडा सुधारने की कोशिश करती रहती थीं। बड़ी बेटी ने स्नातकोतर की परीक्षा उतीर्ण की तथा दैनिक कर्मी के तौर पर एन.एस.एस. में सेवा ज्वाइन की, तत्पश्चात उसकी भारतीय स्टेट बैंक में नियुक्ति हो गयी। विष्णु और बड़ी पुत्री दोनों की नियुक्ति धर्मशाला हिमाचल प्रदेश में ही थी इसलिए घर के आर्थिक हालात कुछ सुधरने लगे परन्तु तब तक बड़ी लड़की की शादी की उम्र भी नजदीक आने लगी।

हिमाचल प्रदेश में सिन्धी लड़के मिलना बहुत मुश्किल कार्य था क्योंकि पूरे प्रदेश में 100 से अधिक सिन्धी परिवार नहीं होंगे इसलिए राजस्थान और दिल्ली में रिश्तेदारों के यहाँ आना जाना बढ गया। आखिर बड़ी लड़की की शादी कर दी गयी तत्पश्चात मंझली लड़की जो कि देखने में सभी भाई बहिनों में सुंदर, घर के काम काज में बहुत कुशल परन्तु पढाई लिखाई (अंग्रेजी विषय में कमजोर होने के कारण) में कमजोर थी, के लिए वर की तलाश शुरू हो गयी।

मंझली लड़की की स्नातक की परीक्षा अंग्रेजी विषय में पास न होने के कारण क्लियर ही नहीं हो पा रही थी चूँकि हिमाचल प्रदेश में स्नातक तक अंग्रेजी अनिवार्य विषय था। इस बीच छोटी लड़की की भी धर्मशाला में हिमाचल प्रदेश वन विभाग में नौकरी लग गयी। आखिर मंझली लड़की का रिश्ता भी पक्का हो गया, लड़के का खुद का अजमेर में चाय पत्ती का कारोबार था।

लड़का इकलौता था, लड़के के पिता जी सरकारी सेवा से सेवानिवृत हुए थे तथा सब वैशाली नगर अजमेर में अपने मकान में रहते थे । 26 नवम्बर 1989 को धूम धाम से विवाह अजमेर में सम्पन्न हुआ तथा एक दिन पश्चात् नव वधु वर के साथ पग फेरे के लिए पीहर आई। पग फेरे के दौरान उसके वर द्वारा वधु को एक मिनट के लिए भी अकेला नहीं छोड़ा गया तथा दोनों शाम को अपने घर चले गए।

दो दिन पश्चात् शाम को 7 बजे लड़के के पिता जी का फ़ोन आता है कि आपकी पुत्री बीमार हो गयी है अतः आप उससे मिलने आ जायें। लड़की का भाई अपने चाचा के साथ फल इत्यादि लेकर अपनी बहन से मिलने गया, वहां उसने पाया कि उसकी बहिन को जुकाम तथा बुखार हो रहा है।

लड़के के पिता द्वारा बताया गया कि कल से इसको यह सब हो रहा है इसलिए हम घबरा गए और आपको फोन कर दिया। उनके द्वारा यह भी बताया गया कि उन्होंने अपने डॉक्टर (जो कि उनके रिश्तेदार थे) को दिखा कर दवाइयाँ भी दी हैं परन्तु कोई फर्क नहीं पड़ रहा है। लड़की के चाचा

द्वारा यह कहा गया कि ऐसी कोई बीमारी लग तो नहीं रही है फिर भी आपने हमें बुलाया बहुत अच्छी बात है और यह दर्शाता है कि आप हमारी बेटी का कितना ध्यान रख रहे हैं।

अगले दिन लड़के के पिता ने सूचित किया कि तबियत सही नहीं होने के कारण आपकी पुत्री को जवाहर लाल नेहरु अस्पताल अजमेर में भर्ती करवा दिया गया है। विष्णु की पत्नी, पुत्र तथा अन्य रिश्तेदार अस्पताल भागे, जहाँ लड़की (जिसका विवाह तीन दिन पूर्व ही हुआ था) नार्मल लग रही थी परन्तु उन लोगो का कहना था कि कहीं ज्यादा बीमार न हो जाये इसलिए अस्पताल में भर्ती करवाया गया है। लड़के वालों के परिचित डॉक्टर तथा उनके सहयोगियों द्वारा 26 नवम्बर को विदा की गयी नवविवाहिता को बीमार करार करते हुए 07 दिन बाद ही ऐसी बीमारी जिसका कुछ पता ही नहीं था का इलाज शुरू किया गया। ससुराल पक्ष द्वारा अभी भी नवविवाहिता को बिल्कुल अकेला नहीं छोड़ा जा रहा था तथा रात को अस्पताल में भी ससुराल पक्ष से ही कोई रिश्तेदार रुकता था।

नवविवाहिता के पीहर वालों ने जब डॉक्टरों तथा ससुराल वाली को 2-3 दिन पश्चात् कहा कि यह तो बिलकुल ठीक लग रही है इन्हें घर क्यों नहीं ले जाया जावे। ससुराल पक्ष वालों का कहना या कि ऐसा है तो आप इसे अपने घर ले आवे, हम बीमार बहू को घर नहीं ले जा सकते। नवविवाहिता के पीहर वालों को समाज का डर सताने लगा तथा वो चुप्पी साध गए।

इस प्रकार 10-12 दिन गुजरने के बाद जब नवविवाहिता के घर वालों द्वारा उन्हें भी रुकने की अनुमति देने के लिए जोर दिया गया तो एक रात 9 बजे से सुबह 7 बजे तक श्रीमती विष्णु (नवविवाहिता की माँ) तथा एक और रिश्तेदार को रुकने की अनुमति ससुराल पक्ष द्वारा दी गयी।

इस दौरान नवविवाहिता जो कि अक्सर उसे दी जाने वाली दवाइयों के नशे में रहती थी, ने रात को थोडा होश आने पर अपनी माँ को इधर उधर डर से देखते हुए बताया कि आपने मेरी शादी जिस व्यक्ति से करवाई है, वह वैवाहिक जीवन जीने के योग्य नहीं अर्थात नपुंसक है। विष्णु की पत्नी के पैरों तले जमीन खिसक गयी परन्तु फिर भी उन्होंने संभलते हुए अपनी पुत्री को ढाढस बंधाते हुए कहा कोई नहीं बेटी उसका इलाज करवा लेंगे तुम घबराओ नहीं।

नवविवाहिता ने प्रतिउत्तर में कहा, “माँ आप कृपया किसी को कुछ मत बताना; नहीं तो ये मुझे मार देंगे।” माँ ने हाँ में गर्दन हिलाई और फिर अपनी रो रही बेटी को पुचकारते हुए कहा, “बेटी तुम बिल्कुल मत घबराओ, धैर्य बनाये रखो, सब ठीक हो जाएगा।”

सुबह 8 बजे ही ससुराल वाले प्रकट हो चुके थे, विष्णु की पत्नी को उनके द्वारा घर जाने की छूट दी गयी। आज ही विष्णु की बड़ी बेटी और दामाद भी दूसरे शहर से मिलने के लिए सीधे अस्पताल पहुँचने वाले थे। दोपहर 12 बजे के आस-पास बड़ी बेटी और दामाद अस्पताल पहुँच गए; मंझला दामाद उस समय अस्पताल में ही था। उन्होंने मंझले दामाद से पूछा, "रात में आप ही अस्पताल में रुक रहे होंगें ?" इस बात को उन्होंने एक-दो बार तो टाल दिया परन्तु बीच में ही छोटे दामाद के पिता ने कहा कि इसका व्यापार है इसलिए थक जाता है तो हम ही अस्पताल में रुक जाते हैं।

बड़ा दामाद अपने तेज स्वभाव के कारण जाना जाता था इसलिए उसने उन्हें टोकते हुए कहा अंकल अगर ऐसे रहेंगे तो इन दोनों में नजदीकियां कैसे बढ़ेंगी ? इस तरह की टिप्पणियों के पश्चात आज 25 दिन पश्चात् अपने घर वालों से सलाह मशविरा करके छोटे दामाद ने अस्पताल में रुकने का मन बना लिया। उधर विष्णु की पत्नी ने घर जाकर अपने ससुर, देवर, देवरानियों को अपने मंझले दामाद के नपुंसक होने के बारे में सूचना दी, तो सब रिश्तेदारों के हवाईयां उड़ गई। बड़ों से सलाह मशविरा करके शाम को ही लड़के वालों से मीटिंग रखी गयी।

(...... शेष अगले संस्करण में)

- राजेश रायसिंघानी

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

***

सी.ए.जी. ऑडिट रन 2024 कार्यक्रम की झलकियाँ

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के जयपुर दौरे की झलकियाँ

(दिनांक 08.01.2025 - 10.01.2025)

संयुक्त हिंदी पखवाड़ा 2024 कार्यक्रम की झलकियाँ

सांस्कृतिक कार्यक्रमों की झलकियाँ

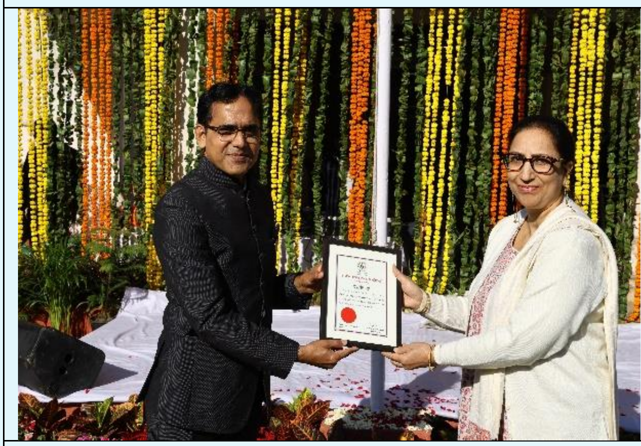

हिंदी कार्यशाला (वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी संवर्ग के लिए आयोजित) की झलक

महादेव - नाथों के नाथ

मेरा निजी विचार है कि व्यक्ति स्वभाव से पशु है और शिक्षा उसे सामाजिक पशु बनाती है अर्थात जैसी हमारी शिक्षा वैसे ही हमारे विचार। इसे अगर और आसान करूँ तो अगर आध्यात्मिक शिक्षा दी जाए तो आध्यात्मिक विचारों की रचना होगी तथा व्यक्ति आध्यात्म के मार्ग की तरफ अग्रसर हो जाएगा और पशु से मनुष्य और मनुष्य से दैवीय पथ की ओर अग्रसर होता जाएगा तथा अगर विपरीत मार्ग पर चलने की शिक्षा दी जाएगी तो विचार विपरीत दिशा में चल पड़ेगे और परिणाम भी ठीक विपरीत प्राप्त होंगे।

एक सवाल कई बार मेरे दिमाग में आता था कि जब इस जगत में कुछ भी बिना किसी नियंत्रण/ प्रभाव के नहीं चलता तो ये सृष्टि कैसे चलेगी ? कोई ना कोई तो है जो इतने सामंजस्य से ये सब चला रहा है। आधुनिक विज्ञान के अनुसार न्यूटन के तीन निम्नलिखित नियमों को कम से कम दो बार पढ़ेंगे, तो आप खुद को इस विषय की और ज्यादा गहराई में उतरते पायेंगे:

i. **"In the first law, an object will not change its motion unless a force acts on it."**
ii. **"In the second law, the force on an object is equal to its mass times its acceleration."**
iii. **"In the third law, when two objects interact, they apply forces to each other of equal magnitude and opposite direction."**

अगर कार्य संचालन और उसके प्रबंधन की बात करूँ तो सरकारी या निजी दफ्तरों में कार्यालयी दैनिक कार्य के दौरान नई प्राप्तियों के साथ-साथ उनके निपटान का एक फ़ॉर्मूला अमल में लिया जाता है कि:

कार्यालय/मंत्रालय के समूह/शाखा/अनुभाग का नाम

माह/वर्ष: अक्टूबर 2024

आदिशेष (Opening Balance): 5

प्राप्तियां (Receipts): 3

योग (Total): 8

निपटान (Settlement): 4

अंतिम शेष (Closing Balance): 4

मुझे लगता है कि ठीक ऐसा ही कोई फ़ॉर्मूला है जिसके आधार पर इस जगत में सब कुछ एक निश्चित गति पर और एक निश्चित क्रम में हो रहा है। आम बोलचाल की भाषा में कहूँ तो implementation की uniformity के लिए rule / base भी common होना चाहिए वरना सब उलझ जाएगा।

तो अब सवाल ये है कि फिर ये कैसे संभव है कि ये ब्रह्मांड, ये जगत, ये सृष्टि बिना किसी नियंत्रण या बिना किसी प्रभाव के चल रही है। कोई ना कोई तो जरुर है जिसके नियंत्रण में ये सब हो रहा है और जैसा कि पहले लिखा गया है कि उस नियंत्रक का सबके ऊपर समान नियंत्रण के लिए उसका फ़ॉर्मूला भी कॉमन टू ऑल ही होना चाहिए, तो मेरे हिसाब से वो फ़ॉर्मूला ये हो सकता है कि:

(प्रारब्ध + कर्म = परिणाम)

अर्थात आपके प्रारब्ध यानि पिछले बैलेंस (+ / -) में वर्तमान कर्म को जोड़ दें तो उसी के अनुसार आपको भविष्य में परिणाम प्राप्त होंगे और पिछला बैलेंस आपके अगले चौले/ देह/ रूप के लिए आपका प्रारब्ध होगा।

अनंत काल से विद्वान ऋषि-महिषी ये कहते रहे हैं कि आत्मा को मनुष्य देह 84 लाख योनियों के बाद मिलती है और आज का विज्ञान भी लगभग वही बात कह रहा है:

“According to the International Union for Conservation of Nature (IUCN), there are approximately 8.7 million species on Earth, but only 1.2 million of these species have been scientifically described and cataloged. Of these 1.2 million described species, around 41,000 are considered threatened with extinction.”

और हम सभी जानते हैं कि 1 मिलियन = 10 लाख अर्थात 8.7 मिलियन = 87 लाख।

प्रजातियों (species) का अर्थ है जैसे सारे व्यक्ति (स्त्री/पुरुष) एक जैसे ही हैं तो वो एक प्रजाति होगी और जैसे सारे बंदर या वानर एक जैसे ही है तो वो एक अलग प्रजाति होगी; इस तरह आपने केवल 2 ही प्रजातियों के बारे में जाना; सोचिए ऐसी 87 लाख प्रजातियों का दावा आधुनिक विज्ञान कर रहा है।

मेरे निजी विचार से जगतपिता शिव ही हैं जो सबसे बड़े गृहस्थ हैं और सबसे बड़े सन्यासी भी हैं। ऊर्जा के उस असीमित स्त्रोत को नमन जिसनें पुरुष और नारी की बराबरी की सबसे अद्‌भुत व्याख्या दी - अर्धनारीश्वर का रूप धारण कर के जिसने ये बताया कि हर पुरुष में नारीत्व है और हर नारी में पुरुषत्व; शायद इसीलिए अर्धनारीश्वर रूप शिव और शक्ति का अविभाजित रूप है।

उस निराकारी, मेरे ईष्ट, शिवजी, के निराकार रूप के महत्व को समझने के दो मुख्य: आधार हैं - महामृत्युंजय मंत्र और शिवलिंग।

पहले महामृत्युंजय मंत्र के महत्व, प्रमाण या उल्लेख और इसके अर्थ इत्यादि के संबंध में चर्चा करते हैं:

i) महामृत्युंजय मंत्र का महत्व - **संस्कृत में महामृत्युंजय उस व्यक्ति को कहते हैं जो मृत्यु को जीतने वाला हो, इसलिए भगवान शिव की स्तुति के लिए महामृत्युंजय मंत्र का जप किया जाता है।** इसके जप से संसार के सभी कष्ट से मुक्ति मिलती हैं। ये मंत्र जीवन देने वाला है। इससे जीवनी-शक्ति तो बढ़ती ही है साथ ही सकारात्मकता भी बढ़ती है। महामृत्युंजय मंत्र के प्रभाव से हर तरह का डर और टेंशन खत्म हो जाती है। 'शिवपुराण' में उल्लेखित इस मंत्र के जप से आदि शंकराचार्य को भी जीवन की प्राप्ति हुई थी।

ii) महामृत्युंजय मंत्र का उल्लेख ऋग्वेद से लेकर यजुर्वेद तक में मिलता है। वहीं शिवपुराण सहित अन्य ग्रंथो में भी इसका महत्व बताया गया है।

iii) महामृत्युंजय मंत्र:
ॐ हौं जूं स: ॐ भूर्भुव: स्व: ॐ,
त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्,
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्,
ॐ स्व: भुव: भू: ॐ स: जूं हौं ॐ !!

iv) महामृत्युंजय मंत्र का सरल अनुवाद:
इस मंत्र का मतलब है कि हम भगवान शिव की पूजा करते हैं, जिनके तीन नेत्र हैं, जो हर श्वास में जीवन शक्ति का संचार करते हैं और पूरे जगत का पालन-पोषण करते हैं। इस

पूरे विश्व में सुरभि फैलाने वाले भगवान शंकर हमें मृत्यु के बंधनों से मुक्ति प्रदान करें, जिससे मोक्ष की प्राप्ति हो जाए।

v) **महामृत्युंजय मंत्र का जप क्यों और कैसे किया जाता है?**

व्यक्ति अपनी रोजमर्रा की समस्याओं से लेकर असीमित दु:ख और पीड़ा के हरण की उम्मीद में भोलेनाथ की शरण में जाते हैं और विवेकानुसार कोई 1100 मंत्र का जप करता है और कोई 11000 मंत्रों का। सबकी उम्मीद एक ही है आदिपुरुष भोलेनाथ की कृपा। माना जाता है कि इस मंत्र का जप करने से अकाल मृत्यु (असमय मौत) का डर दूर होता है; साथ ही कुंडली के ग्रह भी शांत होते हैं।

vi) महामृत्युंजय मंत्र के विज्ञान के संबंध में क्या मान्यता है?

i. इस मंत्र के जाप से मानसिक शांति और एकाग्रता बढ़ती है।
ii. 'जर्नल ऑफ अल्टरनेटिव एंड कॉम्प्लिमेंट्री मेडिसिन' में छपे शोध के अनुसार मंत्र जाप से शारीरिक सेहत में सुधार होता है।
iii. 2003 में दिमाग के हिस्सों की एक्टीविटी जांचने वाले फंक्शनल इमेजिंग टेस्ट की मदद से स्टडी की गई; जिसमें पता चला कि इस मंत्र के जाप करने से दिमाग के अगले हिस्से यानी प्रीफ्रंटल कॉर्टेक्स में सक्रियता बढ़ जाती है। जिससे मानसिक शांति और ध्यान करने में मदद मिलती है।
iv. 2011 में 'इंटरनेशनल जर्नल ऑफ योगा' में छपे शोध के मुताबिक महामृत्युंजय मंत्र के नियमित जाप से मानसिक शांति और एकाग्रता बढ़ती है।
v. 2013 में महामृत्युंजय मंत्र पर 'इलेक्ट्रोएन्सेफलोग्राफी टेस्ट' किया। इस स्टडी में पता चला कि महामृत्युंजय मंत्र बोलने से दिमाग में अल्फा और बीटा तरंगे बढ़ती हैं, जिससे मानसिक शांति मिलती है।
vi. 2019 में राममनोहर लोहिया हॉस्पिटल में हुई 'स्टडी' से पता चला कि महामृत्युंजय मंत्र जाप से तनाव बढ़ाने वाला 'कॉर्टिसोल हार्मोन' कम होने लगता है। इस मंत्र से दिल की सेहत भी अच्छी रहती है।

अब चर्चा उस निराकार रूप 'शिवलिंग' की जिसके महत्व के आगे समस्त जगत निमित कण मात्र है: **शिव पुराण में लिखा है कि फाल्गुन महीने के शुक्ल पक्ष के चौदहवें दिन यानी चतुर्दशी तिथि पर पहली बार स्वयंभू शिवलिंग प्रकट हुआ था।** तब भगवान विष्णु और ब्रह्मा जी ने शिवलिंग की पूजा की। इसी दिन को शिवरात्रि कहा गया।

महाशिवरात्रि को लेकर मान्यता है कि इस दिन शिव-पार्वती का विवाह हुआ था, लेकिन शिव पुराण सहित किसी भी ग्रंथ में इस बात का कोई जिक्र ही नहीं **है। शिव पुराण के 35वें अध्याय में लिखा है कि शिव विवाह अगहन महीने के कृष्ण पक्ष के दूसरे दिन हुआ था** जो इस साल 7 नवंबर को आएगी।

शिवरात्रि पर शिव विवाह मनाने की परंपरा कब से शुरू हुई इस बारे में कोई लिखित जानकारी तो नहीं है परन्तु उज्जैन और काशी के विद्वानों का कहना है कि शिवलिंग के निचले हिस्से में माँ पार्वती का भी स्थान होता है। शिवरात्रि पर महादेव की पूजा रात में होती है और पार्वती के बिना शिव पूजन अधूरा रहता है, इसलिए इस रात को शिव-शक्ति मिलन के पर्व के तौर पर मनाया जाने लगा।

शिव परिवार की अनगिनत कहानियों से हमें निम्नलिखित सीख भी मिलती हैं जिनका अनुसरण करके व्यक्ति मोक्षधाम की तरफ बढ़ता है कि:

i. तनाव दूर करने के लिए ध्यान जरुरी है - महादेव की तरह।
ii. अपनी योग्यताओं पर कभी घमंड ना करें - कण-कण में विद्यमान निराकार की तरह।
iii. संतान को समाज की भलाई करने की सीख दें - कार्तिकेय / मुरुगन और गणेश जी की तरह।
iv. टीम सदस्यों के साथ से सफलता निश्चित - सृष्टि संचालन के लिए ब्रह्मा, विष्णु और महेश की तरह।
v. बिना बुलाएँ कहीं ना जाएं - दक्ष पुत्री सती की तरह।

सृष्टि का सीधा सा नियम है कि मनुष्य ने जो कर्म किया है वो भुगतना ही पड़ेगा लेकिन अगर उस सर्वशक्तिमान महादेव, जो इस सृष्टि के नियमों में ढ़िलाई कर सकते हैं, का आशीर्वाद मिल जाए तो पहाड़ की राई हो सकती है परन्तु महादेव के आशीर्वाद के लिए मार्कंडेय जैसा भगत होना आवश्यक है; इसीलिए तो वे मार्कंडेश्वर हैं।

जीवन एक सफ़र है जिसे वासना से उपासना के मार्ग पर लेकर जाना है या उपासना से वासना के मार्ग पर, निर्णय आपको ही करना है।

क्या-क्या लिखूँ उस भोलेनाथ के बारे में जो नाथों के नाथ हैं, अभी बहुत कुछ कहना है, बहुत कुछ लिखना है, और बहुत कुछ जानना हैं जिसे हम अज्ञानी अभी तक जानते ही नहीं हैं? जीवन के हर क्षण का आनंद लें और जपें ॐ नम: शिवाय, ॐ नम: शिवाय, ॐ नम: शिवाय ...!

- वज़ीर सिंह,
सहायक निदेशक (रा.भा.)

***

<u>मेरे बाऊजी</u>

जिंदगी के पन्नो को जब मैने पलट कर देखा तो बचपन को सबसे हसीन पाया,
पैसा कम था, ख्वाइशें छोटी थी और प्यार था ज्यादा।
बचपन मे हम बहुत जिद्दी हुआ करते थे,
क्योकि हमारी हर जिद पूरा करने वाले हमारे बाऊजी हमारे साथ हुआ करते थे।

वो उनकी कहानियां, वो छिली मूंगफली, वो उनके हाथ की सब्जी, वो लहंगा चुन्नी
और रात 12 बजे का बॉर्डर फ़िल्म का वो आखिरी शो ....!
फोटोज तो ज्यादा नही है मेरे पास उनकी, लेकिन यादें ढेर सारी है।
घोड़ा तो नही बन पाते थे वो, लेकिन कंधे पर बैठा कर बाजार घुमाया करते थे।
खुद फटी जुराब पहनते थे,
लेकिन मेरी जुराब में छोटा सा भी छेद होने पर नानी से हँसते-2 डाट खाते थे।
हमारे बचपन मे हम बहुत रईश हुआ करते थे
क्योंकि हमारे बाऊजी हमारे करीब हुआ करते थे।

पैसा ज्यादा तो नही था उनके पास
लेकिन जिन खिलौनों पर हाथ रख दे, वो हमारे हुआ करते थे।
मेरी हर छोटी-बड़ी उपलब्धियों पर मुझसे ज्यादा वो इतराते थे।
रिश्ते में पिता तो नही पर उससे भी कही बढ़कर थे वो।
उनके होने न होने से इतना ही फर्क पड़ता है कि,
उनके होने से दुनिया भरी थी मेरी और अब है खाली....!!!

- निधि अग्रवाल, अतिथि रचनाकार

टुकड़े

कुञ्ज बिहारी के दो पुत्र थे। दोनों ही पढ़ने में बहुत होशियार। उसे उम्मीद थी कि दोनों ही बड़े होकर कुछ ना कुछ जरूर करेंगे, और ऐसा हुआ भी। कुञ्ज बिहारी का छोटा पुत्र राहुल को बारहवी पास करते ही एक अच्छे से इंजीनियरिंग कॉलेज में दाखिला मिल गया और दूसरी और बड़ा बेटा रमेश अपनी डॉक्टरी की पढाई करने चला गया। समय बीता और रमेश जल्द ही अपनी एम.बी.बी.एस. पूरी कर डॉक्टर बन गया और राहुल भी अपनी पढ़ाई पूरी कर एक अच्छी सरकारी नौकरी में लग गया। दोनों ही पुत्र अपनी अपनी पढ़ाई पूरी कर नौकरी भी अपने ही शहर में लग गए। कुञ्ज बिहारी जो कि अब रिटायर होने वाला था की ख़ुशी का तो ठिकाना ही नहीं था, दोनों पुत्र उसके पास ही जो रहने लगे थे।

अब चूंकि रमेश (बड़ा बेटा) 30 वर्ष का हो चुका था, उसकी शादी के रिश्ते भी आने लगे और कुञ्ज बिहारी ने जल्द ही रमेश की शादी कर दी। घर में बड़ा ही खुशनुमा माहौल था आखिर सालों बाद घर में बहू आई थी। कुञ्ज बिहारी की पत्नी जो कि शरीर से चलने में असमर्थ थी उसका भी ख़ुशी का ठिकाना नहीं था। सब लोग बहुत खुश थे, परन्तु यह ख़ुशी ज्यादा दिन तक नहीं चली रमेश की पत्नी (सुधा) को यह सम्मिलित परिवार में रहना रास नहीं आ रहा था। आये दिन रमेश और सुधा में झगडे रहने लगे। कुञ्ज बिहारी एवं उसकी पत्नी ने सुधा को समझाने का हर संभव प्रयास किया परन्तु उसे तो जैसे कुछ समझ ही नहीं आ रहा था।

घर की इन परेशानियों को देखते हुए कुञ्ज बिहारी ने निर्णय किया की राहुल की भी शादी कर दी जाए ताकि सुधा को भी घर में उसका साथ देने वाला कोई मिल जाएगा और शायद उसके व्यवहार में कुछ परिवर्तन आ जाए। जब राहुल को इसका पता चला कि उसकी शादी की बातें हो रही है तो उसने बताया कि वह एक लड़की से प्यार करता है और उससे शादी करना चाहता है। घरवालों को भी लड़की पसंद आई और बिना किसी परेशानी के रमेश की शादी के एक वर्ष बाद ही राहुल की भी शादी हो गयी।

घर में वापस से ख़ुशी का माहौल था, नयी बहु जो कि राहुल से बहुत प्यार करती थी नए सपने ले कर और नई आशाएं ले कर घर में आई; परन्तु शायद सुधा को नयी बहू का आना बिल्कुल अच्छा नहीं लगा। घर में और भी ज्यादा लड़ाई एवं झगडे होने लगे। नई बहू को भी यह अच्छा नहीं लगा और वह भी कुछ कटा-कटा सा रहने लगी। घर के इन लड़ाई-झगड़ों से तंग आकर कुञ्ज बिहारी ने कुछ समय बाद अपने छोटे बेटे राहुल एवं उसकी पत्नी को घर से अलग कर दिया। राहुल भी जो घर में शान्ति चाहता था चुपचाप अपनी पत्नी के साथ अलग रहने लगा। कुञ्ज बिहारी ने यह सोचा

था कि अगर छोटी बहू को अलग कर देगा तो शायद सुधा थोड़ा ठीक रहे परन्तु परिस्थिति इसके बिलकुल विपरीत रही।

छोटी बहू के अलग होते ही सुधा को यह अहसास होने लगा कि अब उसे कोई इस घर से नहीं निकाल सकता, और वह कुन्ज बिहारी और उसकी पत्नी से भी बुरा बर्ताव करने लगी। इन सभी परेशानियों में डूबा कुन्ज बिहारी भी अब बीमार रहने लगा। बेटों की शादी से पहले छाती फुला कर घूमने वाला कुन्ज बिहारी अब दिल और शुगर की बीमारी से ग्रसित हो चुका था। परन्तु घर की परेशानियों से परेशान कुन्ज बिहारी ने अपनी बीमारी पर ध्यान नहीं दिया और शुगर उसके पूरे शरीर में फ़ैल गयी।

एक दिन नहाते हुए अचानक से वह बेहोश हो गया। रमेश और राहुल ने बिना समय गंवाए उसे अस्पताल में भर्ती कराया, जहाँ डॉक्टर ने कुन्ज बिहारी को बताया कि अगर से उनके दोनों पैर ख़राब हो चुके है। इस बीमारी को आगे बढ़ने से रोकने के लिए उसके दोनों पैर काटने होंगे नहीं तो वह बचेगा नहीं। डॉक्टर तो यह बता कर जा चुका था परन्तु कुन्ज बिहारी अब भी स्तब्ध सा बैठा यही सोच रहा था कि बड़ी बहू सुधा रुपी शुगर को यदि समय रहते परिवार से अलग कर दिया जाता तो आज मेरा पूरा परिवार साथ होता।

- आशीष अग्रवाल,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

***

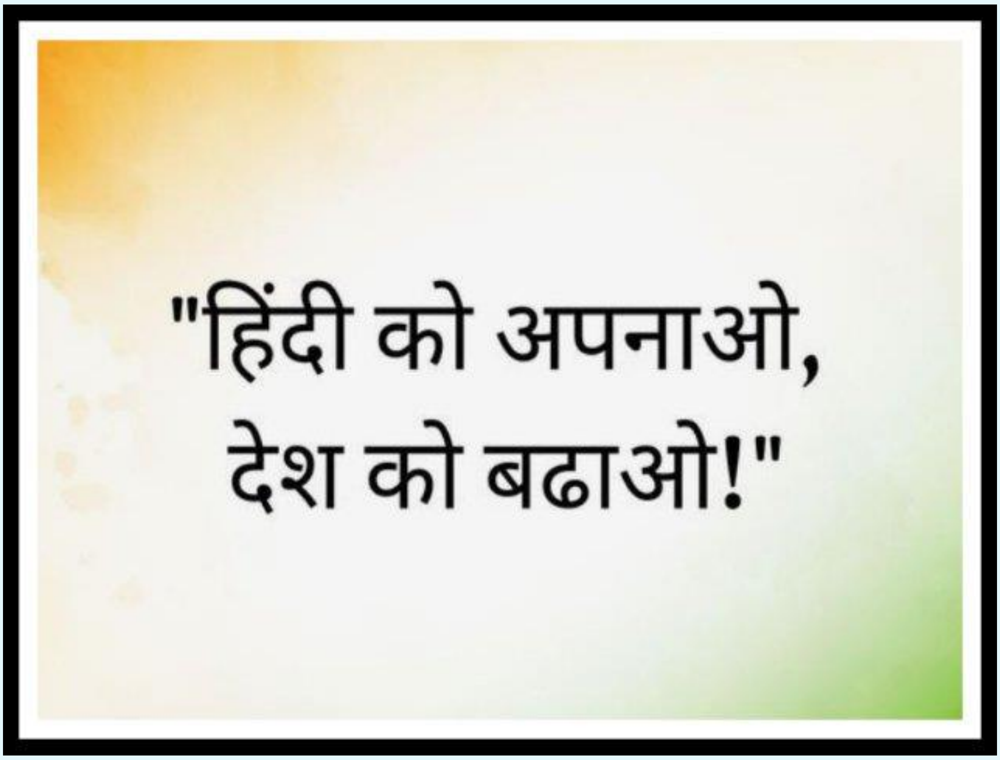

जीना तो गरीबों का ही बेहतर है

जीना तो गरीबों का ही बेहतर है भाई
पैसे वाले क्या खाक जिया करते हैं
अरे ताजा पानी भी नसीब नहीं होता पीने को,
डिस्ट्रल वाटर पिया करते हैं

प्रकृति की गोद नहीं मिलती पैसे वालों को,
मल्टी स्टोरी में लटके रहते हैं,
इससे तो भली गरीबों की झोपड़ी,
कम से कम प्रकृति में तो रहते हैं,

जीना तो गरीबों का बेहतर है भाई,
पैसे बाले क्या खाक जिया करते हैं,
ताजा खाना नहीं मिलता पैसे वालों को,
पिज़्ज़ा बर्गर खाया करते हैं,

सडे फलों की बोतल उतार कर गले में,
बीमारी को न्योता दिया करते हैं,
फैमिली डॉक्टर रखकर घर में,
साइड इफेक्ट किया करते हैं,

जीना तो गरीबों का ही बेहतर है भाई,
पैसे वाले क्या खाक जिया करते हैं।

- विमला देवी अग्रवाल,
अतिथि रचनाकार

किस्मत की किताब

हर इंसान की ज़िंदगी में एक किताब होती है, जिसे हम अपने किस्मत की किताब कह सकते हैं। यह किताब हमारी किस्मत, हमारे निर्णयों और हमारी मेहनत से भरी होती है। यह कहानी उसी किस्मत की किताब की है, जिसमें हर पन्ना एक नई कहानी बुनता है।

- पहला अध्याय: बचपन की यादें

कहानी की शुरुआत एक छोटे से गाँव से होती है, जहाँ एक लड़का मुकेश अपने माता-पिता के साथ रहता था। मुकेश बहुत ही चंचल और होशियार बच्चा था। उसका सपना था कि वह बड़ा होकर एक सफल व्यक्ति बनें। उसके पिता, सुरेश, एक किसान थे, और माँ, कविता, एक गृहिणी। मुकेश के पास बचपन की बेफिक्रियाँ थीं, लेकिन उसके मन में हमेशा एक सवाल होता था–"क्या मेरी किस्मत हमेशा मेरे साथ रहेगी?"

गाँव में एक पुराना मंदिर था, जहाँ लोग पूजा-पाठ करने आते थे। मुकेश ने सुना था कि मंदिर के पुजारी जी, बाबा, के पास एक किताब है, जो किस्मत के बारे में बताती है। एक दिन उसने हिम्मत जुटाई और बाबा से मिलने चला गया।

- दूसरा अध्याय: किस्मत की किताब

बाबा ने मुकेश को देखकर उसे अपने पास बुलाया। मुकेश ने अपनी जिज्ञासा व्यक्त की; "बाबा, क्या आप मुझे किस्मत की किताब दिखा सकते हैं ?"

बाबा ने धीरे से कहा, "बेटा, यह किताब केवल पढ़ने के लिए नहीं है। यह तुम्हारे कर्मों का लेखा-जोखा है। तुम्हें अपने कर्म अच्छे करने होंगे, ताकि तुम्हारी किस्मत भी तुम्हारे साथ हो।"

मुकेश ने बाबा से वादा किया कि वह अपनी मेहनत और ईमानदारी से काम करेगा। उस दिन से मुकेश ने अपने सपनों की ओर बढ़ना शुरू किया।

- तीसरा अध्याय: संघर्ष का दौर

समय बीतता गया, और मुकेश बड़ा होता गया। पढ़ाई में उसे बहुत रुचि थी, लेकिन आर्थिक परेशानियों ने उसकी राह में कई बाधाएँ डालीं। उसके पिता की फसल बार-बार खराब हो जाती थी और उन्हें आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ता था। मुकेश ने ठान लिया कि वह अपने परिवार की मदद करेगा। उसने गाँव के लोगों से छोटी-मोटी नौकरी करने की शुरुआत की। सुबह स्कूल जाता और शाम को मजदूरी करता। उसकी मेहनत से गाँव के लोग प्रभावित थे।

एक दिन, गाँव में एक प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रतियोगिता में पहला स्थान पाने वाले को एक छात्रवृत्ति मिलेगी। मुकेश ने प्रतियोगिता में भाग लेने का फैसला किया। उसने दिन-रात पढ़ाई की और अपने ज्ञान को बढ़ाया।

- ❖ चौथा अध्याय: सफलता की ओर

प्रतियोगिता का दिन आया। मुकेश ने अपने सारे सवालों का सही-सही जवाब दिया और प्रथम स्थान प्राप्त किया। उसकी मेहनत और लगन ने उसे सफल बना दिया। छात्रवृत्ति के माध्यम से, वह अब शहर के एक अच्छे स्कूल में पढ़ाई कर सकता था।

शहर में पहुँचते ही उसे कई नई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। वहाँ के बच्चे अधिक संपन्न थे और मुकेश को उन सब के साथ तालमेल बैठाने में बड़ी कठिनाई हुई। लेकिन उसने हार नहीं मानी। उसने अपनी मेहनत जारी रखी और धीरे-धीरे अपनी जगह बना ली।

- ❖ पाँचवां अध्याय: नए सपने

मुकेश की पढ़ाई सफलतापूर्वक चलती रही। उसने एक अच्छी कॉलेज में प्रवेश लिया और इंजीनियरिंग की पढ़ाई शुरू की। अब उसका सपना और बड़ा हो गया था—वह एक सफल इंजीनियर बनना चाहता था, ताकि वह अपने परिवार और गाँव की स्थिति सुधार सके।

कॉलेज में, मुकेश ने अपनी मेहनत से न केवल अपने अध्यापकों का दिल जीता, बल्कि अपने सहपाठियों के बीच भी लोकप्रिय हो गया। वह हमेशा दूसरों की मदद करता और अपने ज्ञान को साझा करता।

- ❖ छठा अध्याय: प्यार का एहसास

कॉलेज के दिनों में, मुकेश ने एक लड़की, अमृता, से दोस्ती की। अमृता एक होशियार और सुंदर लड़की थी, जो उसके सपनों में शामिल हो गई। उनकी दोस्ती जल्द ही प्यार में बदल गई। अमृता भी अपनी पढ़ाई में बहुत अच्छी थी और दोनों ने एक-दूसरे को प्रेरित किया।

एक दिन, अमृता ने मुकेश से कहा, "हम दोनों को अपने सपनों को साकार करने के लिए मिलकर काम करना चाहिए।"

मुकेश ने सहमति जताई और दोनों ने एक-दूसरे का साथ देने का फैसला किया।

- ❖ सातवाँ अध्याय: संघर्ष और सफलता

मुकेश और अमृता ने मिलकर कठिनाइयों का सामना किया। कॉलेज के बाद, दोनों ने अच्छे जॉब के लिए प्रयास किए। मुकेश को एक प्रसिद्ध इंजीनियरिंग कंपनी में नौकरी मिल गई, जबकि अमृता ने भी एक मल्टीनेशनल कंपनी में जॉब प्राप्त की।

दोनों ने अपने-अपने करियर में सफलता पाई। मुकेश ने अपने गाँव के विकास के लिए कई परियोजनाएँ शुरू कीं। उसने गाँव में शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं को सुधारने के लिए काम किया।

- ❖ आठवाँ अध्याय: वापसी गाँव की ओर

मुकेश ने अनेक सफलताएँ हासिल की, लेकिन वह कभी भी अपने गाँव को नहीं भूला। उसने अपने गाँव में एक स्कूल और एक स्वास्थ्य केंद्र खोलने का निर्णय लिया। उसने अपनी मेहनत से कमाई गई सारी धनराशि गाँव के विकास में लगाने का वादा किया।

वापस गाँव लौटते समय, मुकेश की आँखों में खुशी और गर्व था। उसने देखा कि गाँव के लोग अब उसे पहचानते हैं और उसकी मेहनत को सराहते हैं। गाँव में उसका स्वागत धूमधाम से किया गया।

- ❖ नवाँ अध्याय: किस्मत की किताब का रहस्य

गाँव लौटने के बाद, मुकेश ने फिर से बाबा से मिलने का निर्णय लिया। वह उनसे पूछना चाहता था कि क्या उसकी मेहनत से उसकी किस्मत की किताब में अच्छे पन्ने जुड़े हैं।

बाबा ने मुस्कुराते हुए कहा, "बेटा, तुम्हारी मेहनत और निस्वार्थता ने तुम्हारी किताब में सोने के पन्ने जोड़े हैं। तुम्हारा नसीब तुम्हारे कर्मों का फल है।"

मुकेश ने यह सुनकर संतोष महसूस किया। उसने समझा कि किस्मत केवल भाग्य नहीं है, बल्कि यह हमारी मेहनत और हमारी अच्छाई का परिणाम है।

- ❖ दसवाँ अध्याय: एक नई शुरुआत

मुकेश ने गाँव में शिक्षा का एक नया अभियान शुरू किया। उसने बच्चों को मुफ्त शिक्षा देने का निर्णय लिया, ताकि हर बच्चा पढ़ सके और अपने सपनों को पूरा कर सके। अमृता ने भी उसके साथ मिलकर काम करने का फैसला किया।

धीरे-धीरे गाँव में बदलाव आने लगा। बच्चे स्कूल जाने लगे और गाँव की स्थिति में सुधार होने लगा। मुकेश और अमृता ने मिलकर अपने किस्मत की किताब में नई कहानियाँ जोड़ी।

- ❖ समापन: किस्मत की किताब

मुकेश ने सीखा कि किस्मत की किताब में हर पन्ना हमारे कर्मों से बनता है। अगर हम मेहनत, ईमानदारी और निस्वार्थता से जीवन जीते हैं, तो हमारी किताब के पन्ने सुनहरे होते हैं।

इस प्रकार, मुकेश की कहानी न केवल उसकी मेहनत और संघर्ष का नतीजा थी, बल्कि यह इस बात का प्रमाण भी थी कि किस तरह एक साधारण लड़का अपनी मेहनत और अच्छे कर्मों से अपनी किस्मत को बदल सकता है। मुकेश ने यह सिद्ध कर दिया कि किस्मत की किताब में जो लिखा है, वह हमारी मेहनत और हमारी सोच पर निर्भर करता है।

और इस तरह, मुकेश ने अपनी ज़िंदगी की किताब में नए पन्ने जोड़ते हुए एक नई कहानी लिखी, जो न केवल उसकी खुद की, बल्कि पूरे गाँव की किस्मत की किताब बन गई।

- मीना कंवर,
अतिथि रचनाकार

***

दोस्ती का सफर

रवि और अमन दो बचपन के दोस्त थे, जो एक ही मोहल्ले में बड़े हुए। उनकी दोस्ती इतनी गहरी थी कि लोग उन्हें एक-दूसरे का अंश मानते थे। दोनों की सपने और इच्छाएँ एक-दूसरे से जुड़ी हुई थीं। रवि हमेशा से इंजीनियर बनना चाहता था, जबकि अमन का सपना था कि वह एक प्रसिद्ध लेखक बने।

जैसे-जैसे समय बीतता गया, उनकी ज़िंदगी में चुनौतियाँ आने लगीं। परिवार की समस्याएं, पढ़ाई का दबाव और व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाएँ उनकी दोस्ती पर असर डालने लगीं। एक दिन, अमन को विदेश में पढ़ाई का मौका मिला। यह एक सुनहरा अवसर था, लेकिन रवि के लिए यह बहुत बड़ा सदमा था। उसे डर था कि अब उनकी दोस्ती खत्म हो जाएगी।

अमन ने अपने सपने को पूरा करने के लिए रवि से विदाई ली। रवि ने अपने आँसू छुपाते हुए उसे शुभकामनाएँ दीं, लेकिन उसके दिल में उदासी का एक गहरा सागर था। अमन का विदेश जाना केवल उसकी पढ़ाई का विषय नहीं था, बल्कि यह उनकी दोस्ती के लिए एक बड़ा मोड़ था। समय बीतने के साथ, दोनों ने कोशिश की कि वे फोन और मैसेज के जरिए संपर्क में रहें, लेकिन दूरी ने उनकी दोस्ती को चुनौती दी।

अमन विदेश में नई चीज़ें सीख रहा था और नए दोस्तों के साथ घुल-मिल रहा था। उसने वहाँ की संस्कृति, खान-पान और शैक्षिक प्रणाली का आनंद लिया। हर बार जब वह रवि को फोन करता, तो उसे अपनी नई ज़िंदगी के बारे में बताते हुए खुशी होती। लेकिन उसे यह भी महसूस होता कि उसकी भारत में दोस्ती की गहराई कम होती जा रही थी। वहीं रवि ने अपने घर पर ही इंजीनियरिंग की पढ़ाई जारी रखी। वह भी अपने जीवन में आगे बढ़ने की कोशिश कर रहा था, लेकिन कभी-कभी उसे अमन की याद आती थी।

रवि ने अपने खाली समय में लेखन की ओर रुख किया। उसने अपनी भावनाओं को शब्दों में बुनना शुरू किया। वह अपने और अमन के साथ बिताए हुए क्षणों को याद करता और उन पर लिखता। यह लेखन उसे अमन से दूर रहने के दर्द को सहन करने में मदद करता था। उसने एक ब्लॉग शुरू किया, जिसमें उसने अपनी ज़िंदगी के उतार-चढ़ाव और दोस्ती की महत्वता के बारे में लिखा। धीरे-धीरे उसके पाठकों की संख्या बढ़ने लगी, और उसे एहसास हुआ कि उसकी लेखनी में एक विशेष ताकत है। कुछ सालों बाद, अमन ने भारत लौटने का फैसला किया और दोनों ने एक भव्य पुनर्मिलन की योजना बनाई। रवि उस दिन का इंतजार कर रहा था। जब दोनों मिले, तो खुशी का कोई ठिकाना नहीं था। पहले गले मिलने के बाद, दोनों ने अपने अनुभव साझा किए। अमन ने बताया कि उसने विदेश में कितनी नई चीजें सीखी हैं, जबकि रवि ने उसे अपनी पढ़ाई और जीवन के बारे में बताया। उनकी बातें हंसी और यादों से भरी हुई थीं। लेकिन जैसे-जैसे बातचीत बढ़ी, उन्हें यह एहसास हुआ कि उन्होंने एक-दूसरे से बहुत कुछ सीखा है। रवि ने अपने लेखन के प्रति अपने नए दृष्टिकोण के बारे में बताया, जिससे अमन प्रेरित हुआ। अमन ने अपनी तकनीकी विशेषज्ञता को साझा किया, जिससे रवि को अपने लेखन में तकनीकी विषयों को शामिल करने का विचार आया।

अमन ने रवि से कहा, "हमने एक-दूसरे को हमेशा सपोर्ट किया है, चाहे हम कितनी भी दूर हों।"

रवि ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, "सच्ची दोस्ती कभी खत्म नहीं होती। हम हमेशा एक-दूसरे के साथ रहेंगे।"

इस पुनर्मिलन ने उनके रिश्ते को और मजबूत किया। उन्होंने मिलकर एक नई योजना बनाई। रवि ने अपने लेखन में अमन की तकनीकी जानकारी का उपयोग करने का सोचा, और अमन ने रवि की रचनात्मकता को अपने तकनीकी प्रोजेक्ट्स में शामिल करने की योजना बनाई। इस तरह उनकी दोस्ती ने न केवल व्यक्तिगत स्तर पर, बल्कि पेशेवर स्तर पर भी एक नई दिशा ली। वक्त बीतने के साथ, उनकी दोस्ती ने और भी गहराई हासिल की। वे न केवल दोस्त रहे, बल्कि एक-दूसरे के प्रेरणास्त्रोत भी बन गए। दोनों ने एक नई शुरुआत करने का निर्णय लिया, यह सोचते हुए कि उनकी दोस्ती ने उन्हें हर मुश्किल से लड़ने की ताकत दी है।

कहानी का सार यह है कि सच्ची दोस्ती हमेशा बरकरार रहती है, चाहे समय और दूरी कितनी भी बड़ी क्यों न हो। रवि और अमन ने यह सिद्ध कर दिया कि जीवन की चुनौतियाँ सिर्फ एक यात्रा होती हैं और सच्ची दोस्ती का सफर हमेशा जारी रहता है। इस प्रकार, उनकी दोस्ती ने एक नई पहचान हासिल की और वे हमेशा एक-दूसरे के साथ रहे।

- लोकेन्द्र सिंह, अतिथि रचनाकार

मेवाड़ की वीरांगना हाड़ी रानी

यह कहानी है मेवाड़ की...!

कहानी है, राजस्थान की और एक रानी के ऐसे बलिदान की, जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती है। हम बात कर रहे हैं हाड़ी रानी की, जिनके बलिदान के किस्से इतिहास के पन्नों में स्वर्ण अक्षरों में अंकित हैं। उन्होंने अपनी मातृभूमि के खातिर अपना सिर कलम करने से पहले एक बार भी नहीं सोचा और खुशी-खुशी अपनी बलि चढ़ा दी।

हाड़ी रानी के बलिदान की कहानी सुनकर लोगों का मन विचलित हो जाता है। उन्होंने मेवाड़ के लिए जो किया उसे आज भी याद किया जाता है और लोग उनकी पूजा करते हैं। उनके महल में आज भी लोग उनकी वीरगाथा को महसूस कर सकते हैं। आज हम आपको हाड़ी रानी के इस बलिदान की पूरी कहानी बताने जा रहे हैं, तो चलिए जानें मेवाड़ की वीरांगना हाड़ी रानी के बारे में।

हाड़ी रानी राजस्थान के महाराज हाड़ा चौहान राजपूत की बेटी थीं। उनकी शादी मेवाड़ के सलूंबर के सरदार रतन सिंह चूड़ावत से हुआ था। शादी के कुछ ही दिन बाद उनके पति सरदार रतन सिंह को एक युद्ध में जाना पड़ा। सरदार रतन सिंह अपनी नई नवेली दुल्हन को छोड़ ऐसे जाना नहीं चाहते थे, लेकिन राजपूती होने के नाते वह अपने धर्म से पीछे भी नहीं हट सकते थे। वह जाने के लिए राजी हुए और रानी से एक निशानी मांग ली, ताकि वह उन्हें याद करें, तो उसे देख लें। मगर रानी ने जो निशानी दी, उसकी कल्पना कर पाना उनके लिए भी संभव नहीं था।

किंवदंतियों के अनुसार, किशनगढ़ के राजा मान सिंह और औरंगजेब के बीच युद्ध होना था और औरंगजेब ने किशनगढ़ पर आक्रमण की पूरी तैयारी पहले से की हुई थी। इधर मेवाड़ के राजा राज सिंह औरंगजेब को किशनगढ़ से पहले रोकना चाहते थे, इसलिए उन्होंने यह जिम्मेदारी राव रतन सिंह को सौंप दी। रतन सिंह की शादी को कुछ ही दिन हुआ था और उन्हें अपनी रानी से दूर होना खल रहा था।

युद्ध में जाने का मन न होते हुए भी उन्हें जाना पड़ा, लेकिन जाने से पहले उन्होंने अपने सैनिक को रानी से उनकी निशानी मांगी, ताकि युद्ध में उन्हें रानी की जुदाई का एहसास न हो।

हाड़ी रानी समझ चुकी थी कि उनके पति प्रेम के मोह में हैं और शायद वह अपना काम ठीक से न कर पाएं। यह सोचते हुए उन्होंने रतन सिंह के लिए एक पत्र लिखा और पास रखी तलवार से अपने सिर को कलम कर दिया। सैनिक आंखों में आंसू लिए उनका सिर और पत्र रतन सिंह को देने पहुंच गया जिसे देख रतन सिंह भी खुद को रोक नहीं पाए।

क्या लिखा था पत्र में

हाड़ी रानी ने अपना सिर कलम करने से पहले जो पत्र रतन सिंह के लिए लिखा था, जिसमें उन्होंने अपने पति की हौसला-अफजाई की थी। हाड़ी रानी ने उन्हें युद्ध में आगे बढ़कर दुश्मनों को रोकने के लिए प्रेरित किया था। उन्होंने रतन सिंह पर पूरा विश्वास दिखाते हुए लिखा था कि वह इस काम को पूरी कुशलता से कर सकते हैं। इस पत्र को पढ़कर रतन सिंह खुद को रोक नहीं पाए और हाड़ी रानी का सिर अपने कंधे में बांधकर युद्ध के लिए तैयार हो गए। यह हाड़ी रानी का ही विश्वास था कि वह यह युद्ध जीतेंगे और ऐसा ही हुआ। हाड़ी रानी ने मेवाड़ के लिए बिना सोचे-समझे खुद को कुर्बान कर दिया और हमेशा के लिए इतिहास के पन्नों में दर्ज हो गईं।

- अशोक कुमार यादव,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री परमपिता परमेश्वर के नाम (राम) का माहात्म्य

प्राचीन काल की बात है एक परमहंस योगीश्वर गुरुकुल में अपने शिष्यों को ज्ञानामृत का रसपान करा रहे थे। गुरुदेव बता रहे थे कि बैकुण्ठ में जाने के लिए प्रवृति और निवृति दो मार्ग है। परमज्ञानी और योगीश्वर संतजन आदि तो परमेश्वर का-भजन कर निवृति (कामना रहित) मार्ग से सूर्य मंडल होते हुए-बैकुण्ठ में चले जाते है तथा धर्मात्मा लोग प्रवृत्ति (कामना सहित) मार्ग से चन्द्र मण्डल होते हुए स्वर्ग में जाते हैं। इसी प्रकार स्वर्ग-सुख भोगकर कई जन्म पश्चात मुक्त हो जाते है।

इसके साथ ही उन्होंने अपने ज्ञानोपदेश में शिष्यों से कहा कि- अधर्मी लोग भी किसी उपाय से बैकुण्ठ में जा सकते हैं। तब एक शिष्य ने खड़े होकर अपने गुरुदेव से इस बात को विस्तार से बताने का विनम्र निवेदन किया कि- हे गुरुदेव ! हम शिष्यों पर कृपाकर इस बात को बताने का कृष्ट कीजिए की किस प्रकार की करणी से कुकर्मी / अधर्मी भी बैकुण्ठ में पहुँच सकते है।

शिष्य की बात सुन गुरूदेव कहने लगे कि- हे शिष्यो। बात तो आपने बिलकुल पते की पूछी है, परन्तु खेद के साथ कहना पड़ता है कि जो पुरुष अथवा नारी मन, वचन, कर्म से जान बुझकर पाप करते है, उनका प्रायश्चित केवल नरक भोगने पर ही हो सकता है किन्तु जो प्राणी भूल से, दबाव से अथवा किसी के बहकावें से पाप कर्म करते हैं, उनका शास्त्रानुसार प्रायश्चित करने से वे पाप कर्म जिस प्रकार औषधि खाने से रोग कट जाते है उसी प्रकार कट जाते है।

परन्तु इनके साथ यह आवश्यक है कि फिर उस प्राणी को सदा संयम से रहना पड़ता है क्योंकि जिस प्रकार से औषधि खाने पर जो परहेज नहीं करता, उनका रोग नष्ट-होना तो एक ओर बल्कि अधिक बीमार हो जाता है, ठीक उसी प्रकार जो प्राणी प्रायश्चित करने के उपरान्त भी पाप कर्म करता है उसके शुभ कर्म भी नष्ट हो जाते है। इसलिए शास्त्रानुसार अज्ञान में किये हुए पाप का प्रायश्चित करने के उपरान्त भूलकर भी दोबारा पाप कर्म नहीं करने चाहिए। हे शिष्यो ! अब मैं आपको एक अधर्मी/पापी पुरुष की कथा सुनाता हूँ जो अन्त समय में अज्ञान से, अन्जाने में परम पिता परमेश्वर का नाम लेकर बैकुण्ठ में चला गया था।

पुराने समय की बात है कि कन्नौज नगरी में एक-आत्मदेव नाम का ब्राहम्ण रहता था। वह बहुत ही विद्वान और शास्त्रों का ज्ञाता था, परन्तु कुसंगति में पड़ जाने के कारण कुसंग से कामदेव के वश में होकर एक वैश्या के फंदे में फँस गया। वैश्या के फंदे में फंस जाने एवं उससे प्रीति हो जाने के कारण उसे अपनी रखेल / पत्नी बनाकर अपने घर में रख लिया और अपनी तमाम धन-दौलत (सम्पत्ति) को उस वैश्या के हार-श्रृंगार पर पानी की तरह बहा डाला। जब सारी धन-दौलत और सम्पत्ति

का सर्वनाश हो जाने तथा एक पैसा भी पास नहीं रह जाने के कारण वह हारकर चौरी, ठगी और कुकर्त्य / कुत्सित कर्मों पर उतारू हो गया! क्योंकि कहा गया है कि जो कामी होता है वह शराबी अवश्य होता है तथा जो शराबी और कामी होता है वह जुआरी भी अवश्य होता है। अतः जुआरी होने पर चोरी एवं ठगी और अन्य बुरे कर्म उसके उद्‌यम (पेशे) हो जाते है। अतः यह सभी उस ब्राहम्ण आत्मदेव के पेशे हो गये थे।

गुरुदेव ने वृतान्त को आगे बढ़ाते हुए कहा कि- हे शिष्यों! इस प्रकार वह ब्राहम्ण कुकर्मो में रत रहते हुए उसके उस वैश्या से दस पुत्र पैदा हुए, जिसमें सबसे छोटे लड़के का नाम उसने रामनारायण रखा था। वह अपने सबसे छोटे बेटे राम नारायण' को बहुत प्यार किया करता था और सोते-जागते, उठते-बैठते, खाते-पीते, चलते-फिरते सदा उसी के प्रेम में मग्न रहा करता था। अति प्रेम उमड़ने पर कभी-कभी वह उसे "राम" कहकर तो कभी-कभी केवल" नारायण" ही कहकर पुकारता था। अब वह आत्मदेव ब्राहम्ण जब नब्बे वर्ष की आयु पार करने लगा तो उसकी मृत्यु का समय निकट आ गया, क्योंकि जिसने जन्म धारण किया है उसका मरना अवश्य है, यह अटल सत्य है।

गुरुदेव बोले- हे मेरे प्रिय शिष्यों! इस प्रकार आत्मदेव की नब्बे वर्ष आयु बीती जानकर यमलोक से यमराजजी ने उसको लाने के लिए तीन भयानक यमदूतों को भेजा। सो ज्योहि यमदूत मृत्युलोक में आकर आत्मदेव को ले जाने के लिए उसके गले में फाँसी का फंदा डाला त्योंहि उसने भयभीत होकर अपने सबसे प्यारे और छोटे बेटे रामनारायण को जोर-जोर से उसके लाङ-प्यारवाले नाम- हे नारायण ! हे नारायण। इस नाम से आवाज देकर पुकारने लगा। उसी समय उसकी करुणामयी और दुःखीत आवाज के रूप में जब भगवान नारायण (श्री विष्णु) ने अपना नाम सुना तो उसकी सहायता के लिए अपने चार पार्षद (दूत) मृत्युलोक में भेजे।

भगवान विष्णु के चतुर्भुज पार्षद, श्वेत रंग, शंख, चक्र, गदा और पदम् धारण किये हुए ज्योहि आत्मेदव के पास आये त्योंहि उन्होंने यमराज-के यमदूतो से से कहा कि इस धर्मात्मा को छोड़कर शीघ्र अपने यमलोक चले जाइये, नहीं तो आपको अपमानित होकर यहाँ से जाना पड़ेगा। इस प्रकार जब विष्णु पार्षदों के मुख से आत्मदेव ब्राहम्ण को धर्मात्मा और अपने आपको वहाँ से भाग जाना यमदूतो ने सुना तो उनके आश्चर्य और क्रोध का कोई ठिकाना नहीं रहा। किन्तु फिर भी क्रोध को अपने मन में दबा कर यमदूत इस प्रकार कहने लगे कि-हे विष्णु पार्षदो! यह ब्राहम्ण बड़ा भारी पापी और धूर्त है। इसलिए यमराज ने हमको इसे यमपुरी में ले जाने के लिए भेजा है। सो कृपा कर हमारे काम में आप पार्षदगण विघ्न मत डालिए और अपने धाम बैकुण्ठ का सीधा रास्ता लीजिए।

यमदूतों की बात सुनकर विष्णु पार्षदों ने कहा कि-हे यमदूतो! क्या आप हमे ये बतला सकते हो कि किस प्राणी को नरक में और किस प्राणी को स्वर्ग में भेजा जाता है? ये सुनकर यमदूत बोले कि क्यों नही हम अभी आपको बता सकते है यदि आप सुनने का कष्ट करे तो, किस पापी को नरक में और किस धर्मी को स्वर्ग में भेजा जाता है। सुनिए! जो-जो वेद, शास्त्र, पुराण, स्मृति और धर्मग्रन्थों में शुभ कर्म, धार्मिक कर्म और सद्कर्म लिखे है उनको करने वाला धर्मात्मा प्राणी स्वर्ग में भेजा जाता है और उनमें जो अशुभ कर्म लिखे है उनको करने वाले पापी लोग नरक में ले जाये जाते है। मनुष्य मात्र के पुण्य और पाप के साक्षी सूर्य, चन्द्र, अग्नि और वायु आदि देवता है। सो जैसा जिसका कर्तव्य होता है वैसा वे देवता बतला देते है और उन्हीं के कथनानुसार धर्मराज उस मनुष्य मात्र को शुभाशुभ फल देते हैं।

शिष्यों को कथामृत रसपान कराते हुए गुरुदेव बोले कि-यद्यपि, आत्मदेव पहले धर्मात्मा था और अपनी विद्वता के बल से सदा शुभ कर्म करता और अपने माता-पिता, गुरुजन और परमेश्वर की सेवा-पूजा किया करता था और सुखपूर्वक अपना और अपने परिवार का पालन-पोषण कर रहा था, परन्तु एक दिन जब वह लकड़ी काटने जंगल में गया था तो क्या देखता है कि एक वैश्या और भील शराब पीकर आपस में हँसी-मजाक कर रहे है। जब वन में यह दृश्य उस ब्राहम्ण ने देखा और वैश्या ने भी आत्मदेव को देखा तो उसके रूप पर मोहित होकर वह उससे लिपट गई और इसके बाद वह ब्राहम्ण भी कामातुर होकर उस वैश्या से लिपट गया तदुपरान्त वह उस वैश्या को अपने घर ले आया और घर की तमाम धन-सम्पत्ति उसके रूप, यौवन-श्रृंगार पर नष्ट कर चोरी, ठगी और-अन्य कुकर्मों में ऐसा रत हुआ कि इसके उन पापों का वर्णन करने में एक पूरा पोथा तैयार किया जा सकता है।

सो इस प्रकार जब वह कुसंगत में पड़कर पापी हो गया और पाप कर्म, अशुभ कर्म करने लगा तो इसे नरक में अवश्य भेजना चाहिए। हे पार्षदो! अब आप ही बताइये कि क्या इस ब्राहम्ण आत्मदेव को पापों का दण्ड देना अनुचित है?

गुरुदेव अपने शिष्यों को ज्ञानामृत पिलाते हुए आगे बोले कि- हे मेरे प्यारे शिष्यो ! यमदूतों से उपरोक्त समस्त बाते सुनकर विष्णु पार्षद कहने लगे कि- हे यमदूतो आप लोगो की बाते सुनकर हमको आज अच्छी प्रकार से मालूम हो गया है कि-धर्मराज के यहाँ भी अंधेर खाता ही है और यदि यही हाल रहा, तो सम्भव है कि एक दिन अधर्मी, पापी और दुराचारी, कुकर्मी लोग स्वर्ग में और धर्मात्मा, सद्कर्मी लोग नरक में निवास करने लग जायेंगे। क्योंकि जहाँ आप जैसे अनभिज्ञ कर्मचारी काम पर लगाये जाते है, वहाँ ऐसे न्याय-नीति और सुकर्म सिर पर पैर रख कर "नौ दो ग्यारह" हो जाते है।

जैसे कि यदि माता-पिता अपनी संतान को विष देने लग जाये और विश्वासपात्र मित्र विश्वासघात करने लग जाये तो आप ही बताइये कि फिर बचाने वाला और कौन बाकी रह जाता है? इसलिए राजा का कर्तव्य है कि वह अपने दरबार में नीतिज्ञ, न्यायकारी और धर्मात्मा कर्मचारी रखकर सदा प्रजा की कष्ट और दुःखों से रक्षा करें। अधर्मी और अज्ञानी कर्मचारी रख-कर राजा न केवल अपने आप को बल्कि अपने समस्त कुटुम्ब और राज्य को भी नष्ट करवा लेता है।

विष्णु पार्षदों की बाते सुनकर यमदूत कहने लगे कि-हे श्रीमान् जी! आप हमें अनभिज्ञ कहकर अधिक अपमानित न करें। क्योंकि धर्मराज के दरबार में यह नियम है कि जो कर्मचारी दीवानी और फौजदारी की सभी कानूनी पुस्तके पढ़कर विश्व-विद्यालय की न केवल उच्चतम परीक्षा ही पास करेगा बल्कि अच्छे नम्बरों से सम्मानित होकर जब तक अपने आपको -सुयोग्य प्रमाणित नहीं कर देगा तब तक उसको न्यायकर्ता की कुर्सी देना तो एक और उसे चपरासी पद देकर भी सम्मानित नहीं किया जायेगा। सो आप हमारी कक्षा में सर्वप्रथम आने का केवल उत्तीर्ण प्रमाण-पत्र ही नहीं देखें। यदि आप पार्षदों की इच्छा हो तो न्यायशास्त्र, नीति शास्त्र और धर्मशास्त्र के सहित दण्ड: विभाग की प्रत्येक धारा को उच्च न्यायालयों के उदाहरणों सहित हमारे से सुन सकते है।

सबसे बढ़कर बात धर्मराज के राज्य में यह है कि वहाँ रिश्वत और झूठी गवाही स्वप्न में भी प्रवेश नहीं कर सकती। इसलिए हे विष्णु पार्षद मित्रो! जिस राज्य, देश अथवा सरकारी महकमो (कार्यालयों) में शास्त्र, नीतिज्ञ, न्यायकारी और ईमानदार कर्मचारी/अधिकारी कार्यरत है तथा जहाँ झूठी गवाही और रिश्वतखोरी, भ्रष्ट्राचारियों का प्रवेश द्वार सदा बन्द रहता है, वहाँ-कभी स्वप्न में भी अन्याय होने का मन में विचार करना या लाना पागलपन नहीं तो मूर्खता पूर्ण अवश्य है। इसलिए हे विष्णु पार्षदो! आप हमारे काम में रोड़ा अटका कर इस अधर्मी आत्मदेव को यमलोक में यमराज के पास ले जाने दीजिए, जिससे वहाँ इसके लिए किसी नरक का शीघ्र प्रबन्ध किया जा सके।

यह सुनकर विष्णु पार्षद कहने लगे- हे मित्रो! आपके द्वारा इस प्रकार ज्ञान की बातें करते हुए देखकर किन्तु अज्ञानियों की तरह व्यवहार करने पर हँसी ही नहीं आ रही बल्कि आप लोगों पर, क्रोध भी आ रहा है, क्योंकि जो किसी का बेटा न बनकर बाप बनने की और शिष्य न बनकर गुरु बनने की चाहत रखता है तथा 'परमेश्वर के नाम के माहात्म्य' को न जानकर सर्वज्ञ अन्तर्यामी या ज्ञानी बनना चाहते है उसको बुद्धिमान तो क्या पागल कहने में भी लज्जा आती है। इसलिए आपको धर्मराज के दूत होने के नाते सबसे पहले "परम पिता परमेश्वर के नाम राम का माहात्म्य" पढ़ना चाहिए। क्योंकि जिस प्रकार बहुत ही थोड़ी सी औषधि की मात्रा, रोगी के भंयकर रोग को और आग

की छोटी सी एक चिंगारी लकड़ी और घास के ढेर को तथा सूर्य का प्रकाश महाअन्धकार को शीघ्र ही नष्ट कर देता है। उसी तरह अन्जान से, हँसी-ठिठोली से, क्रोध से अथवा किसी अन्य कारण से लिया गया परम पिता परमेश्वर का नाम भी बड़े से बड़े पाप के पहाड़ो को क्षणभर में चूर-चूर कर देता है। अतः यह अधर्मी आत्मदेव भी श्री हरि (नारायण) का नाम उच्चारण करते ही धर्मात्मा बन चुका है। इसलिए इसको नरक में ले जाना तो एक ओर बल्कि नरक का नाम सुनाना भी पाप होगा।

गुरुदेव आगे की कथा का सार सुनाते हुए बोले कि- हे शिष्यों ! इस प्रकार "नारायण" के नाम का माहात्म्य सुनकर यमदूत अपना छोटा सा मुख लेकर यमपुरी में धर्मराज के पास चले गये और पीछे उस ब्राहम्ण आत्मदेव को विष्णु पार्षदों की कृपा से एक वर्ष की आयु ओर मिल गई। इधर एक वर्ष की आयु ओर मिल जाने पर उस ब्राहम्ण आत्मेदव ने जीवन में क्या किया ? उक्त प्रश्न का प्रत्युत्तर अपने शिष्यों को बाद में बताने का बोलकर उधर यमदूतों ने धर्मराज के पास जाकर क्या कहा ? इस वृत्तान्त का वर्णन करते हुए गुरुदेव बोले कि- हे प्रिय शिष्यों ! विष्णु पार्षदों के पास से यमपुरी में जाकर यमदूतों ने धर्मराज से कहा कि- हे स्वामिन! यद्यपि हम सभी यमदूत गण आपकी सेवा और आज्ञा पालन कर बदले में उसका यथोचित पारिश्रमिक या वेतन लेते हैं, परन्तु हमें इस प्रकार किसी अधर्मी या धर्मात्मा के पास भेजकर हमें अपमानित मत करवाया कीजिए; क्योंकि किसी संत महात्मा ने एक दोहे में कहा है कि-

"मान बिना इस संसार में, जीवन है धिक्कार!
मानरहित पकवान तज, खाइये घर में अन्न ज्वार!!"

इस प्रकार अपने सेवक यमदूतों की बातें सुनकर धर्मराज के धैर्य देने पर उन्होंने आगे कहना प्रारम्भ किया कि हे महाराज धर्मराज-ज्योंहि हमने उस अधर्मी ब्राहम्ण आत्मदेव के गले में फाँसी डालकर यमलोक में लाने की इच्छा की, त्योंहि उसने अपने सबसे छोटे पुत्र जिसका नान 'राम नारायण' था, उसका नाम लेकर उसको नारायण-नारायण लाड के नाम से सम्बोधित कर भयभीत होकर पुकारने लगा। सो इधर उस ब्राहमण द्वारा जोर-जोर से' नारायण नारायण पुकारना हुआ और उधर विष्णु पार्षदों का आना हुआ। विष्णु पार्षदों ने वहाँ आकर हम लोगों को ना केवल डाँटा बल्कि घोर अपमानित कर उल्टे पाँव वापस आपके पास भेज दिया ।अतः हे यमलोक अधिपति! अब तक हम यमदूतों के समझ में यह नहीं आया कि एक अधर्मी ब्राहम्ण द्वारा अपने ही पुत्र को पुकारने पर भगवान श्री हरि विष्णु अपने पार्षदों को पापियों के पास उन्हें बचाने के लिए क्यों भेज देते है? अपने पार्षद यमदूतों की बात सुनकर धर्मराज बोले- हे मेरे यमदूतों ! उस परमपिता परमेश्वर के नाम का माहात्म्य ऐसा ही नहीं है बल्कि इससे भी अदभूत फलदायक है।

अतः आप सभी को इस बात का आश्चर्य नहीं करना चाहिए कि एक अधर्मी पापी ब्राहम्ण को अपने पुत्र का नाम पुकारने पर भी उसे बचाने हेतु श्री परमेश्वर ने अपने पार्षद गण कैसे भेज दिये? क्योंकि उस परब्रम्ह परमेश्वर के का माहात्म्य बड़े-बड़े ऋषिवर और मुनीश्वर तथा ब्रहमा, मनु, भक्त प्रहलाद और राजा बलि जैसे दानवीर भी अच्छी प्रकार से नहीं जानते हैं। वह परमपिता परमेश्वर इस संसार को क्षण में पैदा कर अगले ही क्षण में नष्ट भी कर सकते हैं। उनकी लीला/ माया अपरम्पार है इसलिए जो कोई भी प्राणी अन्त समय में उस श्री परब्रम्ह परमेश्वर नारायण का ध्यान कर उनका नाम जाने-अनजाने में भी स्मरण करता है या उन को सच्चे मन से श्रद्धा पूर्वक उनके नाम से पुकारता है उस प्राणी के तमाम कष्ट और पाप रूपी पहाड़ क्षण भर में काफूर हो जाते है।

अत: उस अधर्मी एवं पापी आत्मदेव ब्राह्मण जैसे प्राणी के भी परमेश्वर का नाम पुकारने से सारे पाप कर्म नष्ट हो जाने से उसे यमपुरी में भूलकर भी लाने की बजाय तुम यमदूतों को उस ब्राह्मण को दंडवत प्रणाम कर यमलोक लौट आना चाहिए था; किन्तु जो प्राणी अपने जीवन में कभी भी न तो शुभ कर्म करता है, न ही धर्म- पुण्य करता है और न ही श्री परमेश्वर का ध्यान-भजन करता है ऐसे पापी आत्मा का तो गले में फाँसी का फंदा डालकर चाबूक से मारते पीटते हुए और कठोर दण्ड देते हुए यमपुरी लाया करो। यही मेरी आज्ञा है।

अपने स्वामी धर्मराज की आज्ञा सुनकर सभी यमदूतो ने प्रतिज्ञा की कि श्री कोई प्राणी/नरनारी शुभ कर्म करते हैं, धर्माचरण करते है तथा परमेश्वर श्री हरि का सदा यथा योग्य श्रद्धा पूर्वक भजन-कीर्तन, ध्यान एवं गुणगान करते हैं अथवा अंत समय में उस परम पिता परमेश्वर श्री विष्णु के नाम का उच्चारण करते है, उस जीवात्मा को भूलकर भी हम यमदूत लोग दर्शन नहीं देंगे, बल्कि उस प्राणी के दर्शन कर अपना जीवन सफल करेंगे।

इस प्रकार इस वृतान्त को पूर्ण कर गुरुदेव ने कुछ क्षण के लिए अपनी वाणी को विराम दिया ही था कि इतने में ही एक शिष्य ने खड़े-होकर गुरुदेव से विनम्रता से कहा कि हे गुरुदेव श्री! बिना किसी धर्म-पुण्य प्रताप से मनुष्य श्री परमेश्वर का नाम नहीं ले पाता है। उस प्राणी के पूर्व जन्म के या वर्तमान जन्म के बुरे और दुष्कर्म ईश्वर की भक्ति में बाधा बनते है तो फिर उस ब्राहम्ण आत्मदेव ने ऐसा कौनसा पुण्य किया था, जो अंत समय परमेश्वर का नाम लेकर बैकुंठवासी हो गया। इसके साथ ही यह भी बताने की कृपा करे गुरुदेव कि उस ब्राहमण आत्मदेव को जो विष्णु पार्षदों की कृपा से एक वर्ष की आयु और मिल गई थी, अपने जीवन में क्या वर्षीय समयावधि का किस प्रकार उपयोग किया ? दोनों प्रश्नों के प्रत्युत्तर सुनाकर हम सभी शिष्यों की जिज्ञासा शांत करते हुए हमे कृतार्थ कीजिए।

इस प्रकार अपने शिष्य के दोनो प्रश्नो को सुनकर गुरुदेव ने सभी शिष्यों को एक साथ संबोधित करते हुए कहा कि हे मेरे प्रिय शिष्यों! सुना कि उस आत्मदेव ने ऐसा कौनसा पुण्य किया था जिससे वह बैकुंठवासी हो गया। गुरुदेव ने प्रथम प्रश्न के प्रत्युत्तर में कहना प्रारम्भ किया कि-एक दिन की बात है कुछ साधु-संत उस ब्राहम्ण आत्मदेव के कन्नौज नगरी में आकर नगर प्रमुख से अपने लिए संध्याकालीन भोजन और रहने के लिए रात्रि विश्राम बाबत किसी धर्मात्मा या सज्जन पुरुष के घर का पता पूछने लगे। वह नगर प्रधान आत्मदेव की दुष्टता और दुराचरण तथा वैश्यागामी केर कारण उससे खिन्न रहता था। अतः उसने यह अच्छा अवसर समझकर उन साधु-संतो से आत्मदेव को उसके दुराचार/दुराचरण का प्रतिफल दिलाने के भाव से आत्मदेव के घर की ओर इशारा करते हुए बोला कि हे महात्माओं! आप सभी के रात्रि विश्राम और संध्याकालीन भोजन के लिए सबसे उत्तम स्थान आत्मदेव ब्राहम्ण का घर है क्योकि एक तो वह ब्राहम्ण कुल से है तथा धर्मात्मा भी है, दूसरा की वह साधु-संतों की और घर आये आगन्तुकों की अच्छी सेवा- टहल भी करता है। यह सुनकर साधु-संतो की टोली प्रसन्न होकर उस आत्मदेव के घर चली गई। आत्मदेव ने अपने घर आये साधु-संतों को देख अपने सामर्थ्य से परे अपनी प्रियत्मा के साथ मिलकर उनका सादर-सत्कार एवं सेवा-टहल करते हुए संध्याकालीन भोजन और शयन बाबत उचित प्रबंध किया।

हे शिष्यो! सुबह उठकर अपने प्रातः कालीन नित्यकर्म से निवृत होकर जब साधु-संतों की टोली अन्यत्र जाने लगी तो ब्राहमण आत्मदेव ने सादर वन्दन के साथ विदा किया तब उन्होंने जाते हुए आत्मदेव ब्राहमण को आशीर्वाद देते हुए बतलाया कि- हे विप्रजन! हम सब तुम्हारे आदर-सत्कार एवं सेवा-टहल से प्रसन्न है तथा हमारे आशीर्वाद से तुम्हें अब जो पुत्र की प्राप्ति होगी उसका नाम 'रामनारायण' रखना। इसलिए साधु-महात्माओं की कृपा से जो आत्मदेव के दसवाँ पुत्र हुआ उसका नाम उसने रामनारायण रखा और साधु-संतों की सेवा के पुण्य के प्रताप से मरते समय पुत्रमोह में श्री परमेश्वर का नाम आकस्मिक / अनजाने से ही उच्चारित हो गया और भगवान "परमपिता परमेश्वर के नाम के माहात्म्य" से ही आत्मदेव ने मरते समय बैकुन्ठ-धाम जैसी उत्तम सद्गति पाई। गुरुदेव श्री ने आगे बताते हुए कहा कि- हे मेरे प्रिय शिष्यो! प्रभु-"श्री परमपिता परमेश्वर के नाम के माहात्म्य" से हर प्राणी को अर्थ-धर्म-काम और मोक्ष ये चारो पदार्थ मिल जाते हैं। इसलिए इन चारो पदार्थों के इच्छित प्राणी को संत-महात्माओं की सेवा, धर्म-पुण्य, शुभ और सद्कर्म करते हुए श्री परमेश्वर का भजन करना चाहिए।

इस प्रकार दूसरे प्रश्न का प्रत्युत्तर देते हुए गुरुदेव बोले- हे गुरुकुल के शिक्षार्थियो! जब उस ब्राहम्ण आत्मदेव को विष्णु पार्षदों की कृपा से एक वर्ष की आयु ओर मिल गई तो उस एक वर्ष की अवधिकाल में आत्मदेव ने सोचा कि - मुझ जैसे पापी एवं व्याभिचारी को अनजाने में परमेश्वर श्री

भगवान नारायण का नाम लेने से यमदूतों की फाँसी से छुटकारा मिल गया तो मेरे जैसे को ब्राहमण के घर जन्म लेकर काम-क्रोध और वैश्यावृति जैसे पाप कर्म में फँसना धिक्कार था। इसलिए यह सोच-विचार कर वह हरिद्वार चला गया और वहाँ जाकर उसने सांसारिक मोहमाया से अपना मन विरक्त (हटा) करके परमेश्वर के ध्यान और भक्ति में लगा लिया।

हरिद्वार में ही विष्णु पार्षदों की कृपा से मिली एक वर्षीय अवधि तक श्री परमेश्वर नारायण के ध्यान और भक्ति मे लवलीन रहते हुए अंत में योगाभ्यास से अपना शरीर त्याग दिया। तब आत्मदेव के लिए एक दिव्य विमान आया। वह दिव्यरूप धारण कर उस विमान पर आरूढ़ होकर वैकुण्ठधाम चला गया। उस दरम्यिान आत्मदेव की जीवात्मा पर देवगण पुष्प वर्षा करने लगे और गंदर्भ और अप्सराएं नाच-गान करने लगी। आत्मदेव की आत्मा के बैकुण्ठधाम जाते समय जय-जयकार की ध्वनि से सम्पूर्ण आकाश गूंजायमान हो उठा।

गुरूदेव अपने शिष्यों को शिक्षाप्रद ज्ञानोपदेश देते हुए बोले- हे शिष्यों ! देखिए कैसे एक अधर्मी, पापी और वेश्यावृति के दलदल में धसा आत्मदेव जैसा व्यक्ति भी अनजाने से परमेश्वर का एक नाम लेने से बैकुण्ठधाम की परम पदवी को पहुँच गया। अतः जो भी प्राणी सच्चे मन से सदा परमेश्वर श्री हरि 'नारायण' का भजन-ध्यान करते है, उनकी गति का गुणगान जिव्हा से किया जाना कठिन है। इसलिए भगवान का भजन करने वाला भक्त कभी स्वप्न में भी नरकगामी नहीं होता है। अत: हर प्राणी को सदा परम पिता परमेश्वर श्री नारायण' का भजन-ध्यान करते रहना चाहिए।

- रामनारायण, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

***

ख्वाबों की दरमियां ख्वाब कई

वक्त गुजरता हैं दरिया हैं कोई,
इस जहाँ में हमारा रखा क्या हैं।

यहाँ इंसानों से आवाजे न आती,
सूने मकानों से फिर गिला क्या हैं।

न नफरतें न ही शिकायतें हैं कोई,
आप कहे आपको कहना क्या हैं।

दिल में गर बात दबी हैं कोई कह दे,
मन ही मन खुद को सताना क्या हैं।

इक यारी ही तो निभा पाये हैं हम,
नफरतों में तो यहाँ बचा ही क्या हैं।

लड़ पडते हैं जो यार के भी खातिर,
फिर उन्हें जमाने से भी डरना क्या हैं।

सादगी से यूँ ही कहते रहेंगे बातें,
बातों को दिल में भी छुपाना क्या हैं।

गुरूर करें तो किस बात का करें कोई,
सादगी के सिवा यहाँ रखा क्या हैं।

ख्वाबों के सिवा कुछ मिला ही नहीं,
फिर तुम्हारा क्या हैं ? हमारा क्या हैं।

- राहुल भदाला (लेखापरीक्षक)

***

प्रेम कहानी

मनुष्य भी अन्य जानवरों की तरह स्वभाव से जानवर ही है और शिक्षा एवं प्रेम इस जानवर को सामाजिक प्राणी बनाती है। लगभग 10-12 साल पहले बी.बी.सी. हिंदी पर एक लेख पढ़ा था जिसमें एक प्रेम कहानी प्रकाशित हुई थी जो एक कवयित्री और चित्रकार की प्रेम कहानी थी जो अमृता प्रीतम और इमरोज़ की प्रेम कहानी थी। जिसे पढ़कर लगा कि आज-लोग ना जाने क्यों सिर्फ पाने को ही प्यार समझते हैं, एक-दूसरे से बंध जाने को ही प्रेम समझते हैं, एक-दूसरे पर हक़ जताने को ही प्यार समझते हैं जबकि मोहब्बत के सही मायने हैं कि एक-दूसरे को ना ढ़ोकर, एक-दूसरे को आजादी देना और एक-दूसरे को बंधन मुक्त कर देना। असल में प्यार में किसी रिश्ते का होना ना होना मायने नहीं रखता; कुछ बातों का अर्थ दुनियाँ की डिक्शनरी के "वर्ड-मीनिंग" से अलग ही होता है।

इस 'एनिमल-कल्चर' में जहाँ हर किसी के पास बहुत से विकल्प (ओप्शन्स) हैं चाहे मोटरसाईकिल का जिक्र हो, मोबाईल का जिक्र हो या जिक्र हो एक इंसान को दूसरे इंसान के विकल्प का। **सच में इस ऑप्शनल दौर में बहुत मुश्किल है अमृता प्रीतम होना, बहुत मुश्किल है इमरोज होना।**

अमृता प्रीतम (1919-2005) पंजाब और पंजाबी के सबसे लोकप्रिय लेखकों में से एक थी। वो पंजाब (भारत) के गुजराँवाला जिले में पैदा हुईं और उन्हें पंजाबी भाषा की पहली कवयित्री माना जाता है। उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार, बल्गारिया वैरोव पुरस्कार और भारत के सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार ज्ञानपीठ पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया लेकिन आज जिक्र उनकी साहित्यिक उपलब्धियों का नहीं बल्कि उनकी व्यक्तिगत जीवन-यात्रा और उनकी प्रेम-यात्रा का करेंगे।

अमृता प्रीतम के दो अंदाज

अमृता का व्यक्तित्व ही रहस्य से भरा हुआ है। सिर्फ 16 वर्ष की उम्र में ही रीति-रिवाज से लाहौर के कारोबारी प्रीतम सिंह से विधिवत शादी होना, दो बच्चे होना और फिर 25 वर्ष इक्कठे रहने के बाद उस व्यक्ति, प्रीतम सिंह, से अलग हो जाना जिसका नाम उन्होंने सदैव अपने नाम के साथ जोड़ लिया हो और **अमृता का अमृता प्रीतम बन जाना**, हालांकि अमृता प्रीतम ने कभी यह स्वीकार नहीं किया कि उन्हें प्रीतम से मोहब्बत भी हुई थी; फिर एक शायर, साहिर, से एकतरफा प्यार होना और फिर जीवन के अगले 40 वर्ष बेखौफ़ होकर बिना शादी किए ऐसे एक शख्स, इमरोज, के साथ जीवन गुजारना जिसके लिए अमृता ने दुनियाँ से जाने के बाद भी उसका साथ ना छोड़ा हो, इतने उतार-चढ़ाव कम ही लोगों की जिंदगी में आते हैं। अमृता प्रीतम उतार-चढ़ाव भरी जिंदगी जीने वाली शख्सियत थीं, जिनके लेखन ने साहित्य जगत को नया आयाम दिया। उनके लिखे हर शब्द में एक अलग ही कशिश थी।

अमृता अपनी कविता **"सिगरेट"** में लिखती हैं कि:

"चिंगारी तूने दी थी,
यह दिल सदा जलता रहा,
वक्त कलम पकड़ कर,
कोई हिसाब लिखता रहा।
मेरे इस जिस्म में,
तेरा सांस चलता रहा,
धरती गवाही देगी,
धुआं निकलता रहा।"

अमृता प्रीतम ने एक बार लिखा था, **"मैं सारी ज़िंदगी जो भी सोचती और लिखती रही, वो सब देवताओं को जगाने की कोशिश थी, उन देवताओं को जो इंसान के भीतर सो गए हैं।"**

अमृता साहिर से बहुत प्रेम करती थी। उन्होंने अपनी आत्मकथा **'रसीदी टिकट'** में लिखा है कि साहिर लाहौर में जब उनके घर आया करते थे और एक-एक कर के कई सिगरेट पिया करते थे तो साहिर के जाने के बाद अमृता उनकी छोड़ी हुई सिगरेट को दोबारा पिया करती थीं जिससे उन्हें प्रेम में सिगरेट पीने की लत लग गई। **जो मेरे विचार से पहला ऐसा मामला है जहां किसी महिला को प्रेम में सिगरेट पीने की लत लगी हो अन्यथा मैंने सिर्फ पुरुषों को प्रेम में असफल होने पर सिगरेट या अन्य किसी लत के लग जाने के बारे में ही सुना था या देखा था।** वो अलग बात है कि प्रेम में असफ़लता जैसा तो कुछ होता ही नही है, आप किसी को चाहते हो तो चाहते हो, बस...!

अमृता प्रीतम साहिर लुधियानवी के साथ

अमृता और साहिर में बहुत सी चींजें समान थी जैसे साहित्यिक अभिरुचि तो थी ही, लेकिन एक तन्हाई भी दोनों में थी; और वो खालीपन ही उन्हें एक-दूसरे के करीब ले आया; पर ये भी सच है कि साहिर की जिन्दगी में एक महिला के आने से दोनों एक-दूजे के नहीं हो सके। कयास लगाए जाते रहे हैं कि वह महिला एक गायिका थी और उसका धर्म जुदा होने के कारण साहिर उससे शादी ना कर सके या कहें हो ना सकी। क्या खूब लिखा है कि:

"मैं जानता हूँ कि तू गैर है मगर यूँ ही !,
कभी-कभी मेरे दिल में ख़याल आता है !"

इसीलिए अमृता साहिर को जिंदगी भर खुद से अलग नहीं कर पाई जिसका अहसास इमरोज़ को भी था। उन दोनों के लिए ही ये कोई अजीब बात नहीं थी और वे दोनों इस बारे में काफ़ी सहज थे। अमृता ने भी इसे निसंकोच स्वीकारते हुए कहा कि साहिर मेरे लिए एक तरह से आसमान हैं और इमरोज़ मेरे घर की छत!

वो इमरोज़ के पीछे स्कूटर पर बैठकर इमरोज की पीठ पर अक्सर कुछ न कुछ लिखती रहती थीं, वो कई बार इमरोज की पीठ पर साहिर का नाम लिखती थी और अपनी पीठ पर उन अक्षरों की लिखावट को उस चित्रकार, इमरोज, ने कई बार महसूस किया परन्तु इससे इमरोज को क्या फ़र्क पड़ता था; बेशक अमृता साहिर को चाहती थी तो चाहती रहे, पर इमरोज तो अमृता को चाहते ही थे और चाहते ही रहे ताउम्र। अमृता अपनी कविता **"पहचान"** में लिखती हैं कि:

"जो तुम्हारी सूरत में मेरे पास आया है,
और वही मैं हूँ... और वही महक है...!"

साहिर लुधियानवी, अमृता प्रीतम और इमरोज

परमात्मा को जिसे जब भी किसी से मिलाना होता है वो मिला ही देता है फिर बहाना चाहे कोई भी हो। अमृता ने एक चित्रकार सेठी से अपनी किताब **'आख़िरी ख़त'** का कवर डिज़ाइन करने का अनुरोध किया था और सेठी के कहने पर ही इमरोज़ ने इस किताब का डिज़ाइन तैयार किया यानि अमृता और इमरोज इस काम के सिलसिले में मिले और फिर कभी अलग नहीं हुए।

इमरोज़ उस मुलाकात को याद करते हुए कहते थे, **"उन्हें डिज़ाइन भी पसंद आ गया और आर्टिस्ट भी।"** अमृता अपनी कविता **"कुफ्र"** में लिखती हैं कि:

"यह जो एक घड़ी हमनें,
मौत से उधार ली है,
गीतों से इसका दाम चुका देंगे।"

दुनियाँ में हर आशिक़ की तमन्ना होती है कि वो अपने इश्क़ का इज़हार करें, लोगों को ये बताए वो बताए; लेकिन सच ये है कि जब व्यक्ति सच में किसी से प्रेम करता है तो किसी से अपने उस ख़ास का जिक्र तक नहीं करता और कई बार तो व्यक्ति अपने उसी ख़ास से भी अपने प्रेम के बारे में नहीं कह पाता जिससे वो प्यार करता है। अमृता और इमरोज़ भी इस मामले में कुछ ऐसे ही थे कि उन्होंने भी कभी एक दूसरे से नहीं कहा कि वो एक-दूसरे से प्यार करते हैं।

अमृता और इमरोज को जानने के दो ही माध्यम हो सकते हैं - एक अमृता और दूसरे इमरोज, उन दोनों के अलावा कोई तीसरा उतना सशक्त नहीं हो सकता जितने वो दोनों स्वयं; इसलिए खुद इमरोज़ कहते थे कि जब प्यार है तो बोलने की क्या ज़रूरत है? फ़िल्मों में भी आप उठने-बैठने के तरीक़े से बता सकते हैं कि हीरो-हीरोइन एक दूसरे से प्यार करते हैं या नहीं लेकिन वो फिर भी बार-बार कहते हैं कि वो एक-दूसरे से प्यार करते हैं और ये भी कहते हैं कि वो सच्चा प्यार करते हैं जबकि प्यार तो कभी झूठा होता ही नहीं है या तो होगा या नहीं होगा।

इमरोज ने यह भी बताया कि परंपरा ये है कि आदमी और औरत एक ही घर के एक ही कमरे में रहते हैं लेकिन वे दोनों पहले दिन से ही एक ही छत के नीचे अलग-अलग कमरों में रहते रहे। अमृता रात के समय लिखती थीं जब ना कोई आवाज़ होती हो, ना टेलीफ़ोन की घंटी बजती हो और ना कोई आता-जाता हो और उनको लिखते समय चाय चाहिए होती थी लेकिन वो ख़ुद तो उठकर चाय बनाने जा नहीं सकती थीं इसलिए इमरोज ने रात के एक बजे उठना शुरू कर दिया। वो चाय बनाते और चुपचाप उनके आगे रख आते, ये सिलसिला लगभग चालीस सालों तक चला।

अमृता प्रीतम और इमरोज

उमा त्रिलोक अपनी किताब **'अमृता एंड इमरोज़-ए लव स्टोरी'** में लिखती हैं कि अमृता और इमरोज़ की लव-रिलेशनशिप तो रही है लेकिन इसमें आज़ादी बहुत है। बहुत कम लोगों को पता है कि वो एक ही घर में अलग-अलग कमरों में रहते थे और जब इसका ज़िक्र होता था तो इमरोज़ कहा करते थे कि एक-दूसरे की ख़ुशबू तो आती है। ऐसा जोड़ा मैंने बहुत कम देखा है कि एक-दूसरे पर इतनी निर्भरता तो है लेकिन कोई दावा नहीं है।

इमरोज की मुंबई में गुरुदत्त साहब के यहाँ नौकरी लगना, इमरोज के जाते ही अमृता को तेज बुखार होना, तीसरे ही दिन इमरोज का वापिस आना और कभी भी अमृता को ये ना कहना कि वो वापिस उसी के लिए आये थे और ना कभी अमृता का इमरोज को ये कहना कि उन्हें तेज बुखार इमरोज के जाने और खुद के अकेले होने से हुआ था, इमरोज के लौटने पर रेलवे स्टेशन पर ट्रेन की बोगी के आगे अमृता का खड़े मिलना और उनके बुखार का उड़ जाना, अमृता का राज्यसभा के लिए मनोनीत होना और अमृता के संसद से बाहर आने तक संसद की पार्किंग में गाड़ी में ही इमरोज का घंटो बैठे रहना और अमृता की यादों में रहना इत्यादि, क्या-क्या जिक्र करूँ उस रूहानी रिश्तें का जिसे समझने में जमाने को जमाने लगे।

अमृता प्रीतम की कविता **"एक मुलाक़ात"** में वे लिखती हैं कि:

"अब रात घिरने लगी तो तू मिला है,
तू भी उदास, चुप, शांत और अडोल,
मैं भी उदास, चुप, शांत और अडोल,
सिर्फ - दूर बहते समुन्द्र में तूफ़ान है...!"

अमृता का आख़िरी समय बहुत तकलीफ़ और दर्द में बीता। बाथरूम में गिर जाने से उनकी हड्डी टूट गई और उसके बाद फिर ना तो उस दर्द ने उन्हें कभी छोड़ा और ना ही उस दर्द में इमरोज ने अमृता को छोड़ा।

उमा त्रिलोक कहती हैं कि इमरोज़ ने अमृता की सेवा करने में अपने आपको पूरी तरह से झोंक दिया। उन दिनों को अमृता के लिए इमरोज़ ने ख़ूबसूरत बना दिया। उन्होंने उनकी बीमारी को उनके साथ-साथ सहा। बहुत ही प्यार से वो उनको खिलाते, उनको पिलाते, उनको नहलाते, उनको कपड़े पहनाते। वो उनसे बातें करते, उन पर कविताएं लिखते, उनकी पसंद के फूल लेकर आते। जबकि वो इस काबिल भी नहीं थीं कि वो हूँ-हाँ करके उसका जवाब ही दे दें।"

दुनियाँ को अलविदा कहने से कुछ समय पहले अमृता ने अपनी अंतिम नज्म लिखी कि **"मैं तुम्हें फिर मिलूँगी"**, जो सिर्फ इमरोज के लिए थी; और 31 अक्तूबर 2005 को अमृता ने दुनियाँ से जाने से लेकर 2023 में इमरोज के जाने तक अमृता इमरोज के साथ थी, उनके बिल्कुल क़रीब। इस बारे में पूछने पर इमरोज़ अक्सर यही कहते थे, **"उसने जिस्म छोड़ा है, मेरा साथ नहीं।"**

अमृता प्रीतम और इमरोज

ये थी एक कवयित्री और एक चित्रकार की कहानी - एक सफल प्रेम कहानी।

- वज़ीर सिंह,

सहायक निदेशक (रा.भा.)

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

GOVERNMENT OF INDIA

संघ का राजकीय कार्य हिंदी में करने के लिए वार्षिक कार्यक्रम 2025-26

ANNUAL PROGRAMME FOR TRANSACTING THE OFFICIAL WORK OF THE UNION IN HINDI 2025-26

गृह मंत्रालय

MINISTRY OF HOME AFFAIRS

राजभाषा विभाग

DEPARTMENT OF OFFICIAL LANGUAGE

www.rajbhasha.gov.in

हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2025-26 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्य विवरण	"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को **100%** 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को **100%** 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 70% 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र **100%** के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/ व्यक्ति	1 ख क्षेत्र से क क्षेत्र को **90%** 2 ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को **90%** 3 ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 60% 4. ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र **90%** के राज्य/संघ राज्यक्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	1 ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 60% 2 ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 60% 3 ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 60% 4.ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र **60%** के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	**100%**	**100%**	**100%**
3.	हिंदी में टिप्पण	80%	55%	35%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	75%	65%	35%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	45%
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	70%	60%	35%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	**100%**	**100%**	**100%**
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	**100%**	**100%**	**100%**

9. जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुलअनुदान में से डिजिटल सामग्री अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक,ई-हिंदी समाचार पत्र, सीडी/डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%
10. हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में काम करने की सुविधायुक्त इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों जिनमें कंप्यूटर भी शामिल है, की खरीद।	100%	100%	100%
11. वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12. नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्ड आदि द्विभाषी रूप में प्रदर्शित किए जाएं ।	100%	100%	100%
13. (i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)
(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)
(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण		वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण	
14.राजभाषा संबंधी बैठकें			
(क) हिंदी सलाहकार समिति		वर्ष में 2 बैठकें	
(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक),	
(ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)	

15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया साहित्य का हिंदी अनुवाद	**100%**	**100%**	**100%**
16.	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/ उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हों ।	**45%**	35%	25%

(न्यूनतम अनुभाग)

सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, "क" क्षेत्र में कुल कार्य का 45%, "ख" क्षेत्र में 30% और "ग" क्षेत्र में 20% कार्य हिंदी में किया जाए ।

<u>विदेशों में स्थित भारतीय कार्यालयों के लिए कार्यक्रम</u>

(क) हिंदी में पत्राचार (भारत/विदेश में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों के साथ)	50%
(ख) फाइलों पर हिंदी में टिप्पण	50%
(ग) वर्ष के दौरान नराकास की बैठकों की संख्या (नराकास का गठन किसी नगर में केंद्र सरकार के 7 या इससे अधिक कार्यालय होने की स्थिति में किया जाए)	प्रत्येक वर्ष में एक बैठक
(घ) वर्ष के दौरान विराकास (विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति) की बैठकों की संख्या (विराकास का गठन कार्यालय-अध्यक्ष की अध्यक्षता में किया जाए)	प्रत्येक तिमाही में एक बैठक
(ड.) कंप्यूटरों सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी उपलब्धता	100%
(च) हिंदी टंकण कार्य करने वाले कर्मचारी/आशुलिपिक	प्रत्येक कार्यालय में कम से कम एक
(छ) दुभाषियों की व्यवस्था	प्रत्येक मिशन/दूतावास में स्थानीय भाषा से हिंदी में और हिंदी से स्थानीय भाषा में अनुवाद के लिए दुभाषियों की व्यवस्था की जाए ।

कार्यालय उपयोग हेतु द्विभाषी शब्दावली संग्रह

क्र.स.	अंग्रेजी शब्द	हिन्दी अर्थ
1	Abeyance	स्थगन
2	Agenda	कार्यसूची
3	Bifurcation	द्विभाजन
4	Biennial	द्विवार्षिक
5	Chaotic condition	अस्त-व्यस्त स्थिति
6	Code of conduct	आचार-संहिता
7	Compliance	अनुपालन
8	Demi-official letter	अर्द्ध-शासकीय पत्र
9	Directive principles	निदेशात्मक सिद्धांत
10	Ex-gratia	अनुग्रहपूर्वक
11	Fundamental human rights	मूलभूत मानव अधिकार
12	Honorarium	मानदेय
13	Itinerary	यात्रा कार्यक्रम
14	Jurisdiction	अधिकार क्षेत्र, क्षेत्राधिकार
15	Modus operandi	कार्य-प्रणाली
16	Noting and drafting	टिप्पण और प्रारूपण
17	Prior concurrence	पूर्व-सहमति
18	Unanimously	सर्वसम्मति से, एकमत होकर
19	Vested interest	निहित स्वार्थ
20	Zone of consideration	विचार क्षेत्र

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

आमेर पैलेस, जयपुर

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा - II) राजस्थान, जयपुर

(कार्यालयी परिसर के लिए क्यू.आर. कोड स्कैन करें)